ओ३म्

पाक्षिक परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

परोपकारिणी

वर्ष - ५७ अंक - २० महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र अक्टूबर (द्वितीय) २०१५

महर्षि दयानन्द सरस्वती

शैक्षणिक भ्रमण की झलकियाँ

राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर

राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा, राजा पार्क, जयपुर

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५७ अंक : २०

दयानन्दाब्द: १९१

विक्रम संवत्: आश्विन शुक्ल, २०७२

कलि संवत्: ५११६

सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११६

सम्पादक

प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२११७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:॥

RNI. No. ३९५९/५९

परोपकारी

अक्टूबर द्वितीय २०१५

अनुक्रम

१. श्राद्ध और गरुड़ पुराण की......	सम्पादकीय	०४
२. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	१०
३. अमर हुतात्मा श्रद्धेय भक्त फूल सिंह	चन्दराम आर्य	१७
४. वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन		२२
५. चार्वाक दर्शन एवं वेद	डॉ. वेद प्रकाश	२५
६. श्री गजानन्द जी आर्य का ८५ वां जन्मदिन		३३
७. जिज्ञासा समाधान-९७	आचार्य सोमदेव	३७
८. संस्था-समाचार		३९
९. पुस्तक-समीक्षा		४०
१०. स्तुता मया वरदा वेदमाता-२०		४१
११. आर्यजगत् के समाचार		४२

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

श्राद्ध और गरुड़ पुराण की वास्तविकता

पुराण और गप्प दोनों शब्द अन्योन्याश्रित हैं। जब गप्पे अधिक हो जायें तो पुराण बन जाता है। पुराण है तो गप्पों की भरमार होनी है। सामान्य रूप से सभी धार्मिक लोग धर्म में चमत्कार बताने के लिये गप्पों का आश्रय लेते ही हैं। इसी कारण धर्मग्रन्थों में गप्पों की कमी नहीं मिलती। पुराण और जैन ग्रन्थ तो गप्पों में एक से एक बढ़कर हैं। गरुड़ पुराण में भी गप्पों की कमी नहीं है। गरुड़ पुराण में यमलोक के मार्ग का वर्णन करते हुए मार्ग में पड़ने वाली वैतरणी नदी की चौड़ाई शत योजन विस्तीर्ण अर्थात् सौ योजन चौड़ी बताई है, एक योजन में चार कोस होते हैं, एक कोस में दो मील होते हैं। यह नदी कोई पानी की नदी नहीं है, यह नदी पूय शोणित वाहिनी अर्थात् जिसमें खून और पस बहती है। ऐसी कोई नदी संसार में है नहीं परन्तु पुराणकार के नक्शे में तो है। एक आर्यसमाजी को गरुड़ पुराण का परिचय सत्यार्थप्रकाश की निम्न पंक्तियों से मिलता है, जो अन्यों के लिए भी उतना ही सटीक है-

प्रश्न- क्या गरुड़ पुराण भी झूठा है?

उत्तर- हाँ, असत्य है।

प्रश्न- फिर मरे हुए जीव की क्या गति होती है?

उत्तर- जैसे उनके कर्म हैं।

प्रश्न- जो यमराज राजा, चित्रगुप्त मन्त्री, उसके बड़े भयङ्कर गण कज्जल के पर्वत के तुल्य शरीरवाले जीव को पकड़ कर ले जाते हैं, पाप-पुण्य के अनुसार नरक-स्वर्ग में डालते हैं। उसके लिये दान, पुण्य, श्राद्ध, तर्पण, गोदानादि वैतरणी नदी तारने के लिये करते हैं। ये सब बात झूठ क्योंकर हो सकती हैं।

उत्तर- ये सब बातें पोपलीला के गपोड़े हैं। जो इस लोक से भिन्न लोकों के जीव वहाँ जाते हैं, उनका धर्मराज, चित्रगुप्त आदि न्याय करते हैं तो यदि यमलोक के जीव पाप करें तो दूसरा यमलोक मानना चाहिये कि वहाँ के न्यायाधीश उनका न्याय करें और पर्वत के समान यमगणों के शरीर हों तो दीखते क्यों नहीं? और मरनेवाले जीव को लेने में छोटे द्वार में रुक जाते। जो कहो कि वे सूक्ष्म देह भी धारण कर लेते हैं तो प्रथम पर्वतवत् शरीर के बड़े-बड़े हाड़ पोपजी विना अपने घर के कहाँ धरेंगे? जब जङ्गल में आगी लगती है तब एकदम पिपीलिकादि जीवों के शरीर छूटते हैं। उनको पकड़ने के लिये असंख्य यम के गण आवें तो वहाँ अन्धकार हो जाना चाहिये और जब आपस में जीवों को पकड़ने को दौड़ेंगे तब कभी उनके शरीर ठोकरें खा जायेंगे तो जैसे पहाड़ के बड़े-बड़े शिखर टूटकर पृथिवी पर गिरते हैं, वैसे उनके बड़े-बड़े अवयव गरुड़पुराण के बाँचने-सुनने वालों के आँगन में गिर पड़ेंगे तो वे दब मरेंगे वा घर का द्वार अथवा सड़क रुक जायगी तो वे कैसे निकल और चल सकेंगे? श्राद्ध, तर्पण, पिण्ड-प्रदान उन मरे हुए जीवों को तो नहीं पहुँचता, किन्तु मृतकों के प्रतिनिधि पोपजी के घर, उदर और हाथ में पहुँचता है। जो वैतरणी के लिये गोदान लेते हैं, वह तो पोपजी के घर में अथवा कसाई आदि के घर में पहुँचता है। वैतरणी पर गाय नहीं जाती, पुन: किसकी पूँछ पकड़ कर तरेगा? और हाथ तो यहीं जलाया वा गाड़ दिया गया, पूँछ को कैसे पकड़ेगा? यहाँ एक जाट का दृष्टान्त इस बात में उपयुक्त है-

एक जाट था। उसके घर में बीस सेर दूध देनेवाली गाय थी। दूध बड़ा स्वादिष्ट होता था। कभी-कभी पोपजी के मुख में भी पड़ता था। उसका पुरोहित यही ध्यान कर रहा थ कि जब जााट का बुड्ढा बाप मरने लगेगा तब इस गाय का सङ्कल्प करा लेंगे। दैवयोग से उसके बाप का मरण समय आया। जीभ बन्द हो गई और खाट से नीचे उतार सुवाया। बहुत से जाट के सम्बन्धी उपस्थित थे। उस समय पोपजी पुकारा- ''लो यजमान! इसके हाथ से गोदान कराओ।'' जाट ने दश रुपया निकाल, पिता के हाथ में रखकर बोला- ''पढ़ो सङ्कल्प!'' पोपजी बोले- ''वाह! बाप वारम्वार मरता है? साक्षात् गाय लाओ, वह दूध भी देती हो, बुड्ढी न हो और सब प्रकार उत्तम हो।''

जाट- एक गाय हमारे है, उसके विना हमारे लड़के-बालों का निर्वाह नहीं हो सकता, उसको न दूंगा। लो ये बीस रुपये का सङ्कल्प। तुम दूसरी गाय ले लेना।

पोपजी- वाहजी वाह! तुम अपने बाप से भी गाय को अधिक समझते हो? अपने पिता को वैतरणी में डुबा, दु:ख देना चाहते हो? तुम अच्छे सुपुत्र हुए! तब तो पोपजी की ओर सब कुटुम्बी हो गये, क्योंकि उन सबको पहिले ही से पोपजी ने बहका रक्खा था और उस समय भी इशारा कर दिया। सबने मिलकर हठ से उसी गाय का दान पोपजी को दिला दिया। उस समय जाट कुछ भी न बोला। उसका पिता मर गया। पोपजी गाय, बछड़ा और दूध दोहने की बटलोही लेकर, घर में जा, गाय-बछड़े को बांध, बटलोही को धर, यजमान के घर आया, श्मशान में ले जा, दाह किया। वहाँ भी कुछ-कुछ पोपलीला चलाई। पश्चात् दशगात्र सपिण्डी कराने आदि में भी उसको मूंडा। महाब्राह्मणों ने भी लूटा, भुक्खड़ों ने भी बहुत-सा माल पेट में भरा। जब सब हो चुका, तब जाट ने जिस-किसी के घर से दूध माँग-मूंग निर्वाह किया। चौदहवें दिन प्रात:काल पोपजी के घर पहुँचा। देखा तो गाय को दुह, बटलोई भर, पोपजी की उठने की तैयारी थी। इतने ही में जाटजी पहुँचे। पोपजी ने कहा आइये बैठिये!

जाटजी- तुम भी इधर आओ।

पोपजी- अच्छा दूध धर आऊँ।

जाटजी- नहीं, दूध की बटलोई इधर लाओ। पोपजी जो, बटलोई सामने धर, बैठे।

जाटजी- तुम बड़े झूठे हो।

पोपजी- क्या झूठ किया?

जाटजी-गाय किसलिये ली थी?

पोपजी- तुम्हारे बाप के वैतरणी तरने के लिये।

जाटजी- फिर तुमने वैतरणीके किनारे क्यों न पहुँचाई? हम तुम्हारे भरोसे पर रहे। न जाने मेरे बाप ने वैतरणी में कितने गोते खाये होंगे?

पोपजी- नहीं-नहीं, वहाँ इस दान के पुण्य के प्रभाव से दूसरी गाय बन गई। तुम्हारे बाप को पार उतार दिया।

जाटजी- वैतरणी नदी यहाँ से कितनी दूर और किधर की ओर है?

पोपजी- अनुमान तीस क्रोड़ कोश दूर है। क्योंकि उनञ्चास कोटि योजन पृथिवी है और दक्षिण नैर्ऋत दिशा में वैतरणी नदी है।

जाटजी- इतनी दूर से तुम्हारी चिट्ठी वा तार का समाचार गया हो, उसका उत्तर आया हो कि वहाँ पुण्य की गाय बन गई, अमुक के पिता को पार उतार दिया, दिखलाओ?

पोपजी- हमारे पास 'गरुड़पुराण' के लेख के विना डाक वा तारवर्की दूसरी कोई नहीं।

जाटजी- इस गरुड़पुराण को हम सच्चा कैसे मानें?

पोपजी- जैसे सब मानते हैं।

जाटजी- यह पुस्तक तुम्हारे पुरुखाओं ने तुम्हारी जीविका के लिये बनाया है। क्योंकि पिता को विना अपने पुत्रों के कोई प्रिय नहीं। जब मेरा पिता मेरे पास चिट्ठी-पत्री वा तार भेजेगा तभी मैं वैतरणी के किनारे गाय पहुँचा दूँगा और उनको पार उतार, पुन: गाय को घर में ले आ, दूध को मैं और मेरे लड़के-बाले पिया करेंगे, लाओ! दूध की भरी हुई बटलोई, गाय, बछड़ा लेकर जाटजी अपने घर को चला।

पोपजी- तुम दान देकर लेते हो, तुम्हारा सत्यनाश हो जायगा।

जाटजी- चुप रहो! नहीं तो तेरह दिन तक दूध के विना जितना दु:ख हमने पाया है, सब कसर निकाल दूँगा। तब पोपजी चुप रहे और जाटजी गाय-बछड़ा ले, अपने घर पहुँचे।

जब ऐसे ही जाटजी के से पुरुष हों तो पोपलीला संसार में न चले।

सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ११, पृ. ४०८-४११

इसी प्रकार इक्कीस प्रकार के नरकों का वर्णन किया गया है। गरुड़ पुराण अन्य पुराणों की भांति यज्ञों में पशु हिंसा का भी उल्लेख करता है, वेदोक्त यज्ञ की हिंसा के अतिरिक्त अपने लिये पशु मारता है, ऐसा ब्राह्मण वैतरणी नदी में गिरता है। गरुड़ पुराण में शूद्र द्वारा वेद पढ़े जाने पर दण्ड विधान है, वेद पढ़ने वाला शूद्र भी वैतरणी नदी में गिरता है। गरुड़ पुराण में लिखा है जो शूद्र होकर वेद पढ़ता है, जो शूद्र कपिला गाय का दूध पीता है, यज्ञोपवीत धरण करता है, ब्राह्मणों से संसर्ग करता है, ऐसा वेद पढ़ने वाला शूद्र वैतरणी नदी में गिरता है। गरुड़ पुराण में लिखा है- दूसरी नदियाँ स्नान करने से पापी पुरुष को पवित्र करती

हैं। यह गंगा नदी दर्शन तथा स्पर्श से, पान करने से, गंगा शब्द के उच्चारण मात्र से हजारों पापी पुरुषों को पवित्र कर देती है। यदि प्राण कण्ठ में आ गये हों फिर भी यदि मनुष्य गंगा-गंगा ऐसा उच्चारण करे तो वह विष्णु लोक को प्राप्त होता है। इसी प्रकार गरुड़ पुराण में सती-प्रथा का भी महत्व बताते हुए कहा गया है- यदि पतिव्रता स्त्री पति के साथ परलोक जाने की इच्छा करे, तब वह पति के मरने के बाद स्नानकर, रोली, केसर, अंजन, सुन्दर वस्त्र, आभूषण धारण कर ब्राह्मण व बन्धु वर्ग को यथायोग्य दान करे। गुरुजनों को नमस्कार करे, मन्दिर में देवता के दर्शन करे, पहने हुए आभूषण उतारकर विष्णु को अर्पित कर दे। श्रीफल लेकर सब मोह छोड़ श्मशान पहुँचे। सूर्य को नमस्कार कर चिता की परिक्रमा कर चिता को पुष्प शय्या समझकर उस पर बैठकर पति को अपनी गोदी में लिटाये। हाथ का श्रीफल सखि को दे अग्नि जलाने का आदेश दे और इस अग्निदाह को गंगा-स्नान समझे। स्त्री गर्भवती हो तो पति के साथ शरीर दाह न करे। पति के साथ चिता में जलने वाली स्त्री का शरीर तो जल जाता है परन्तु आत्मा को कुछ भी कष्ट नहीं होता, सती होने पर नारी के पाप वैसे ही दग्ध हो जाते हैं, जैसे अग्नि में धातुओं के मल नष्ट हो जाते हैं। पतिव्रता स्त्री को अग्नि उसी प्रकार नहीं जलाती जैसे सत्य बोलने वाले मनुष्य को अग्नि नहीं जलाती। पुराणकार कहता है- यदि स्त्री पति के साथ दग्ध हो जाती है तो वह फिर कभी स्त्री शरीर धारण नहीं करती, अन्यथा हर जन्म में वह स्त्री ही बनती है। सती होने वाली स्त्री अरुन्धती सदृश होकर स्वर्ग लोक में पूजनीय बन जाती है। स्वर्गलोक में चौदह इन्द्र के राज्य करने तक अपने पति के साथ आनन्द मनाती हुई, अप्सराओं के द्वारा स्तुति को प्राप्त होती है। सती होने होने वाली स्त्री माता-पिता-पति तीनों कुलों का उद्धार करती है। मनुष्य के शरीर पर साढ़े तीन करोड़ रोम हैं, इतने वर्षों तक सती स्त्री स्वर्ग में रहती है, सूर्य-चन्द्र के रहने तक पतिलोक में निवास करती है। सती स्त्री अपनी इच्छा से पुन: लक्ष्मीवान कुल में जन्म धारण करती है। पुराण गप्पकार अन्त में कहता है- जो स्त्री क्षणमात्र अग्निदाह के दु:ख से भयभीत अपने को नहीं जलाती, वह जन्मपर्यन्त वियोग अग्नि में जलती है और दु:खी होती है। अत: स्त्री को उचित है कि पति को रुद्र रूप जानकर उसके साथ अपने शरीर का दाह करे।

गरुड़ पुराण में सोलह अध्याय हैं परन्तु इस पुराण का मन्तव्य नौवें अध्याय से तेरहवें अध्याय में पूर्ण हो जाता है। प्रारम्भ के अध्यायों में यम मार्ग की चर्चा है। यमालय, वैतरणी का वर्णन है। आगे किस पाप को करने से मनुष्य कौनसी योनि को प्राप्त करता है, बताया गया है। गर्भ के दु:ख किस प्रकार के हैं, यह बताकर अपने प्रयोजन को सिद्ध करने की भूमिका में कहा गया है- मनुष्य पाप करके भी कैसे पाप के दु:खों से बच सकता है, उसके उपाय के रूप में पुत्र-प्राप्ति और पुत्र द्वारा किया श्राद्ध मनुष्य को सभी दु:खों से छुड़ा देता है, यहाँ भूमिका के रूप में एक कथा कही गई है, जो राजा एक प्रेत का और्ध्व दैहिक कर्म करके उसे दु:खों से मुक्ति दिला देता है।

मनुष्य मरने लगे तो उसे शैय्या से उतार कर तुलसी दल के पास गोबर से लिपे स्थान पर लिटा दे। पास में शालीग्राम रखे। इससे निश्चित मुक्ति होती है। तिलदान, दर्भ का स्पर्श, शालीग्राम का जल पिलाना, गंगाजल मुख में डालना। जो मनुष्य धर्मात्मा होता है, उसके प्राण शरीर के उपरि छिद्र से निकलते हैं। जो पापी होता है, उसके प्राण देह के निम्न छिद्रों से निकलते हैं। विष्णुलोक से विमान आकर उस आत्मा को विष्णु लोक ले जाता है।

दसवें अध्याय में मृत्यु के बाद, पुत्र मुण्डन कराये, गंगा की मिट्टी का शरीर पर लेप करे, शव को स्नान कराकर चन्दन का लेप करे, नवीन वस्त्र से ढककर पिण्डदान करे, परिवार के लोग शव की प्रदिक्षणा कर सर्वप्रथम पुत्र अर्थी को कन्धा देवे। अग्नि की प्रार्थना कर श्मशान में चिता बनावे, पिण्ड बनाकर चिता में रखे, सपिण्ड श्राद्ध करे। जो पञ्चक में मरता है, उसकी सद्गति नहीं होती, पञ्चक पांच नक्षत्रों को कहते हैं। इनमें मरने पर पहले नक्षत्रों की पूजा करे, पत्नी सती होना चाहे तो सती हो जाये। शव का दाह कर कपाल क्रिया करे। स्त्रियाँ स्नान कर तिलाञ्जलि देवें। घर आकर स्नानकर गो ग्रास दे, जो भोजन अपने घर न पका हो, उसका पत्तल में भोजन करे। बारह दिन तक मृतक के स्थान पर घृत का दीपक जलाये। चौराहे पर दूध पानी रखे। तीसरे या चौथे दिन श्मशान

जाकर अस्थि का चयन करे। दूध का जल छिड़क कर अग्नि को शान्त करे। तीन दिशा में तीन पिण्ड दान करे। चिता भस्म को इकट्ठा कर उसपर पानी भरा घड़ा रखे, श्मशान में प्रथम गड्ढे में अस्थि-पात्र रखे फिर जलाशय में ले जावे, फिर यथाविधि गंगा में प्रक्षेप करे। जिसकी अस्थियाँ जितने वर्ष गंगा में रहती हैं, वह उतने वर्ष स्वर्ग लोक में रहता है। संन्यासियों को जल में बहा दे या भूमि में गाड़ दे।

ग्यारहवें अध्याय में दशगात्र विधि का वर्णन है। मरे व्यक्ति का पाक्षिक, मासिक, फिर वार्षिक श्राद्ध करे। दशरात्रि प्रेत के नाम पर दूध, दीप, नैवेद्य, सुपारी, पान, दक्षिणा, दूध, पानी आदि देवे, जो प्रेत के नाम से देते हैं, वह प्रेत को प्राप्त हो जाता है। इस में पहले दिन से दसवें दिन तक प्रतिदिन क्या करे, इसका वर्णन है। दसवें दिन सब परिवार वाले मुण्डन कराके स्नान कर ब्राह्मणों को दसों दिन तक मिष्टान्न भोजन कराये, गो ग्रास दे कर भोजन करें।

ग्यारहवें दिन वृषोत्सर्ग करे, शय्यादान करे, शय्या में विष्णु की स्वर्ण प्रतिमा बनाकर दान करें, प्रेत के लिये गौ, वस्त्र, वाहन, आभूषण, घर जो भी जितना देने में समर्थ हो, उतना ब्राह्मणों को दान करे। ब्राह्मणों के चरण धोये, लड्डू मिष्टान्न आदि देवें। वृषोत्सर्ग करने से मनुष्य सभी प्रकार के पापों से मुक्त हो जाता है। इसमें अड़तालीस प्रकार के श्राद्ध बताये गये हैं।

अगले तेरहवें अध्याय में सूतक का वर्णन है। किस दुर्घटना से किस सम्बन्ध को कितने दिन का सूतक होता है, यह विस्तार से बताया गया है। हर स्थान पर शय्या दान, पददान का विधान है। पददान में छाता, जूता, वस्त्र, अंगूठी, कमण्डल, आसन, पञ्चपात्र, इन सात वस्तुओं का नाम पद है। इसके बाद तेरह ब्राह्मण को भोजन करावें। फिर तीर्थ-श्राद्ध, गया-श्राद्ध, पितृ-श्राद्ध करने का विधान है। इस प्रकार श्राद्ध करने से पितर तृप्त और प्रसन्न होते हैं।

गरुड़ पुराण में बहुत सारी बाते प्रसंगवश उद्धृत हैं, उनपर भी दृष्टि डालना उचित होगा। एक लम्बी सूची दी गई है, क्या-क्या करने से मनुष्य नरक को प्राप्त होते हैं, पूरा चौथा अध्याय ऐसा है, जिसका शीर्षक है- ते वै नरक गामिनः। ब्राह्मण यदि यज्ञ न करे, अखाद्य खाये तो अगले जन्म में व्याघ्र बनेगा। पाँचवें अध्याय में क्या करने से कौन-सी योनि प्राप्त होती है, इसका वर्णन किया गया है। जैसे जो बाहर से ब्राह्मण वेषधारी है, सन्ध्या नहीं करता, वह अगले जन्म में बगुला बनता है। मनुष्य के शुभाशुभ कर्म समान होने पर पुनः मनुष्य जन्म मिलता है- ''**मानुषं लभते पश्चात् समी भूते शुभाऽशुभे।** ५/५२'' छठे अध्याय में मनुष्य के तीन ऋण की चर्चा की गई है। गर्भ में वृद्धि किस प्रकार होती है, इसकी प्रसंग से चर्चा की गई है। जीवन की नश्वरता बताते हुए धर्माचरण करने की प्रेरणा दी गई है। कर्मफल के अनुसार मनुष्य पुनर्जन्म को प्राप्त करता है। ग्यारहवें अध्याय में शरीर की अनित्यता का सुन्दर वर्णन है। मरने वाले के लिये रोना व्यर्थ है, वह कभी लौटकर नहीं आता। चौदहवें अध्याय में स्वर्ग की धर्मसभा का वर्णन है, इसमें लम्बी चौड़ी गप्पें लगाई गई हैं। उस धर्म सभा में वेद-पुराण का पारायण करने वालों को स्थान मिलने की चर्चा है। इसी अध्याय में ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी, संन्यासियों का भी उल्लेख मिलता है। नवीन वेदान्त की चर्चा में अध्यारोप अपवाद से ब्रह्म चिन्तन करने का विधान किया गया है। शरीर के पारमार्थिक और व्यावहारिक दो रूपों का वर्णन किया गया है। शरीर के अन्दर सात लोक कौनसे हैं? इस की चर्चा है। मोक्ष प्राप्ति के लिये अजपा गायत्री जप का विधान किया है। धर्मात्मा स्वर्ग का सुख पाकर पुनः गर्भ में कैसे आता है, इसका वर्णन करते हुए सुन्दर शब्दों में मनुष्य के शरीर का महत्त्व बताया गया है।

गरुड़ पुराण मुख्य रूप से और्ध्व दैहिक क्रियाओं के विधि विधान का ग्रन्थ है। जिसमें ब्राह्मणों ने अपने काल्पनिक भय दिखा कर मनुष्य को मृतक के निमित्त से भोजन, दानादि कराने की व्यवस्था है, जिससे परम्परा से ब्राह्मणों के अधिकारों का संरक्षण देखने को मिलता है, जैसा कहा गया है-

यह संसार देवताओं के आधीन है, देवता मन्त्रों के आधीन है, मन्त्र ब्राह्मण के आधीन है, अतः सारा संसार ब्राह्मणों के आधीन होता है।

देवाधीनं जगत्सर्वं, मन्त्राधीनाश्च देवताः।
ते मन्त्रा ब्राह्मणाधीनाः, तस्मात् ब्राह्मण दैवतम्।।

- **धर्मवीर**

परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्त्वावधान में
१३२ वाँ ऋषि बलिदान समारोह

दिनांक २०, २१, २२ नवम्बर २०१५, शुक्र, शनि, रविवार

महापुरुषों का यज्ञमय जीवन हमको प्रत्येक कदम पर प्रेरणा व मार्ग दर्शन देता रहता है, जिसके कारण हम उनके ऋणी हो जाते हैं। इस ऋण से मुक्त होने का एक ही उपाय है- महापुरुषों की विचारधारा का यथासामर्थ्य प्रचार-प्रसार। विराट व्यक्तित्व महर्षि दयानन्द की समग्र मानव जाति ऋणी है। इस ऋण को चुकाने का स्वर्ण-अवसर ऋषि के १३२ वें बलिदान वर्ष के उपलक्ष्य में हमको प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर परोपकारिणी सभा भव्य समारोह का आयोजन करने जा रही है।

ऋग्वेद पारायण यज्ञ- १६ नवम्बर से 'ऋग्वेद पारायण यज्ञ' का आरम्भ किया जायेगा, इस यज्ञ की पूर्णाहूति बलिदान समारोह के अन्तिम दिन २२ नवम्बर को प्रात: १० बजे होगी। यज्ञ के ब्रह्मा श्री सत्यानन्द वेदवागीश होंगे। यह यज्ञ ऋषि-उद्यान, अजमेर की यज्ञशाला में होगा।

वेदगोष्ठी - प्रतिवर्ष की परम्परा के अनुसार इस वर्ष भी अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ दिल्ली एवं अनुसन्धान केन्द्र परोपकारिणी सभा के संयुक्त प्रयास से वेदगोष्ठी का आयोजन किया जायेगा। इस गोष्ठी में देश के विविध विद्वान् अपने शोधपूर्ण मौलिक विचार प्रस्तुत करेंगे। इस वर्ष वेदगोष्ठी का विचारणीय बिन्दु है- **भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद।** जो विद्वान् गोष्ठी में शोधपत्र प्रस्तुत करना चाहते हैं, वे ३० अक्टूबर तक सभा के पते पर प्रेषित करवा देवें। २०, २१, २२ नवम्बर को ऋषि बलिदान समारोह के कार्यक्रमों के साथ-साथ वेदगोष्ठी भी चलती रहेगी। ऋषि-भक्त इसे सुनने का लाभ उठा सकते हैं।

चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण वेद प्रतियोगिता- प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली इस प्रतियोगिता में २१ वर्ष तक के छात्र भाग ले सकते हैं। किसी भी वेद को आद्योपान्त स्मरण करके इस प्रतियोगिता में भाग लिया जा सकता है। जो छात्र जिस वेद पर गत वर्षों में पारितोषिक ग्रहण कर चुके हैं, वे उस वेद से अतिरिक्त वेद स्मरण करके भाग ले सकते हैं। २० नवम्बर को परीक्षा एवं २१ नवम्बर को पुरस्कार-वितरण का कार्यक्रम होगा। जो छात्र इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपने-अपने गुरुकुलों, आश्रमों, संस्थानों से आचार्य द्वारा अधिकृत पत्रक पर २-छायाचित्र सहित अपना परिचय ३० अक्टूबर, २०१५ तक आचार्य महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान, अजमेर के पते पर भेज दें।

सम्मान - प्रतिवर्ष विशिष्ट वैदिक विद्वान्, विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को इस समारोह में सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष भी सम्मान -समारोह होगा। जिसमें अनेक विद्वान्-विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित किया जायेगा।

अक्टूबर के आरम्भ में अजमेर में हलकी ठंड होने लगती हैं, ऋषि उद्यान खुले में होने से सर्दी का प्रभाव कुछ अधिक रहेगा। रात्रि में कम्बल ओढ़ने जैसी ठण्ड रहेगी। जो समूह में रहना चाहते हैं, उनकी निवास व्यवस्था ऋषि उद्यान में होगी और जो अपने निवास की व्यवस्था होटल-धर्मशाला में करवाना चाहते हैं, कृपया वे सभा कार्यालय से पूर्व सम्पर्क कर अग्रिम राशि जमा करवा कर कमरा आरक्षित करवा लें।

सभी से विशेष निवेदन है कि अपने आने की सूचना कम से कम एक सप्ताह पूर्व दे देवें, जिससे संख्या का अनुमान होकर तदनुसार व्यवस्था की जा सके।

सभी से निवेदन है कि १३२ वें बलिदान समारोह में अपने परिवार व समाज के सभी कार्यकत्ताओं सहित पधार कर महर्षि को हार्दिक श्रद्धांजलि प्रदान करें, महर्षि दयानन्द के स्वप्न को साकार करने हेतु प्रेरणा उत्साह प्राप्त कर प्रचार-प्रसार को एक नई चेतना प्रदान करें।

ऋषि मेले में आमन्त्रित विद्वान्- प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु जी-अबोहर,आचार्य विजयपालजी-झज्जर, डॉ. ब्रह्ममुनि जी-महाराष्ट्र, डॉ. सुरेन्द्र कुमारजो, कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्विद्यालय हरिद्वार, डॉ. वेदपाल जी-बडौत, आचार्या सूर्या देवी जी - शिवगंज, डॉ. राजेन्द्रजी विद्यालंकार, सत्येन्द्रसिंह जी- मेरठ, डॉ. कृष्णपाल सिंह जी- जयपुर, श्री सत्यानन्द आर्य- दिल्ली, श्री राजवीर जी-मुरादाबाद, श्री जगदीश जी शर्मा- जयपुर, श्री शिवकुमार जी चौधरी -इन्दौर, श्री जयदेव जी आर्य-राजकोट, श्री सत्यपाल जी पथिक, प. भूपेन्द्र सिंह जी, पं. कलानाथ शास्त्री-जयपुर, डॉ. जगदेव विद्यालंकार, पं. देवनारायण तिवाड़ी- कोलकाता, श्रीमती अमृत बहन- दिल्ली, श्री राकेश- अमृतसर, श्रीमती इन्दुपुरी-मोगा, आचार्य ओम्प्रकाश-आबूपर्वत, डॉ. रामनारायण शास्त्री- जोधपुर, डॉ. मुमुक्षु आर्य- दिल्ली, डॉ. नयन कुमार-परली महा., श्री माधव देशपाण्डे- मन्त्री महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा, पं. पूनमचन्द नागर- अहमदाबाद, डॉ. सच्चिदानन्द महापात्र- पुरी ओडिशा, डॉ. नरदेव गुड़े- लातूर, श्री विद्यामित्र ठकुराल- दिल्ली, श्री सुरेश अग्रवाल- प्रधान गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा, पं. रामचन्द्र- सोनीपत, डॉ. ओम्प्रकाश होलीकर- लातूर, स्वामी सुधानन्द- ओड़िशा, श्री सत्यवीर शास्त्री- रोहतक, डॉ. शिवदत्त पाण्डे- सुल्तानपुर, पं. धीरेन्द्र पाण्डे- जबलपुर, डॉ. सुकुमार आर्य- मैंगलूर कर्नाटक, डॉ. सुरेन्द्र- रोहतक, डॉ. धर्मवीर कुण्डू- हरियाणा, ब्र. नन्दकिशोर, डॉ. विरेन्द्र अलंकार-चण्डीगढ़, डॉ. सुरेन्द्र- चण्डीगढ़ आदि।

इस समारोह हेतु आपका आर्थिक सहयोग आयकर की धारा '८०-जी' के अन्तर्गत दिए गये प्रावधान के अनुरूप कर मुक्त होगा। विदेश में निवास कर रहे धर्मप्रेमी सज्जन स्वदेश में होने वाले इस समारोह हेतु मुक्त हस्त से दान देकर देश का गौरव बढ़ाएँ। सभा को भारतीय शासन द्वारा विदेशों से दानस्वरूप दी गई राशि को प्राप्त करने की छूट प्राप्त है। आपका सहयोग ही हमारा सम्बल है। शुभकामनाओं सहित।

गजानन्द आर्य	धर्मवीर	ओम मुनि
प्रधान	कार्यकारी प्रधान	मन्त्री

पृष्ठ संख्या ४२ का शेष भाग....

श्री महावीर प्रसाद जांगिड़, श्री सतीश शाण्डिल्य, श्री महावीर प्रसाद सैनी आदि यज्ञ में सम्मिलित हुए।

८. वैदिक प्रचार- आर्यसमाज शाहपुरा, जि. भीलवाड़ा, राज. द्वारा वैदिक प्रचार-प्रसार का कार्यक्रम पिवणिया तालाब स्थित दयानन्द आश्रम में जलझूलनी समारोह के समय रखा गया, जिसमें विडियो कैसेट के द्वारा स्वामी दयानन्द के जीवन पर आधारित घटनाएँ, वैदिक विचार, नारी शिक्षा, नारी जागरण, सती प्रथा व छुआछुत का विरोध, पाखण्ड का खण्डन आदि का प्रोजेक्टर द्वारा चित्रण दिखा कर प्रदर्शन किया गया। वैदिक सिद्धान्तों पर आधारित बेनरों द्वारा प्रदर्शनी लगाई गई तथा आकर्षक सज्जा भी भी की गई, जिसे सैकड़ों लोगों ने अवलोकन किया। लघु वैदिक साहित्य का निःशुल्क वितरण किया गया।

९. वैदिक धर्म का प्रचार- जयपुर, राज. में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् राज. एवं नगर की अन्य आर्य संस्थाओं द्वारा यहाँ के मुख्य शिवालायों व मन्दिर परिसरों में बैनर व पत्रक वितरण के माध्यम से प्रचार किया गया- दूध व्यर्थ न बहाइए, गरीबों और बीमारों में बांटिए, यही जरूरतमन्दों की सेवा व सच्ची भक्ति होगी। मन्दिर प्रशासकों ने भी इस पर अनुकूल प्रतिक्रिया दी।

वैवाहिक

१०. वर चाहिये- आर्यसमाजी परिवार, संस्कारित आयु- २६ वर्ष, कद- ५ फूट ७ इंच, शिक्षा- सी.एस. (कम्पनी सैक्रेक्ट्री) युवती हेतु आर्यसमाजी परिवार का संस्कारित युवक चाहिए। **सम्पर्क-०९७८४९७२४६८**

चुनाव समाचार

११. वैदिक सत्संग परिवार पंजाब के चुनाव में **प्रधान**- श्री नरेन्द्र कुमार सूद, **मन्त्री**- श्री महेन्द्रपाल आर्य, **कोषाध्यक्ष**- श्री अजय चड्ढा को चुना गया।

डॉ. ब.द. धवन का सम्मान- आज की चकाचौंध वाली दुनिया में तथा अर्थ-प्रधान सोच में किसी मनुष्य में वेद ज्ञान की ललक का होना अपने में एक अपवाद है। संकल्प में अद्भुत शक्ति भी होती है। जो वेद ज्ञान की पिपासा से तृप्त होकर अपने को जीवन में उन्नत बना लेता है, जनमानस में उनका व्यक्तित्व अविस्मरणीय बन जाता है। डॉ. ब.द. धवन, निवासी ३५९, सैक्टर-१५ए, चण्डीगढ़, वेद ज्ञान के प्रति अद्भुत ललक के कारण उदाहरण हैं। इस समय इनकी आयु ९० वर्ष की है। डॉ. धवन पंजाब सरकार से डिप्टी सैकेट्री (PCS) के पद से १९८४ में ५८ वर्ष की आयु में सेवानिवृत हुए। सेवानिवृति से पूर्व वेद ज्ञान की तृप्ति हेतु संस्कृत का अध्ययन कर एम.ए. की उपाधि पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ से प्राप्त की तथा सेवा काल में ही वर्ष १९८१ ई. में वैदिक लिटरेचर में पी.एच.डी. की उपाधि से सुसज्जित हुए। सेवानिवृत्ति के बाद अपना सारा समय वेद अध्ययन में समर्पित कर दिया तथा वेद प्रचार का कार्य बड़ी लग्नशीलता से आरम्भ कर दिया। चण्डीगढ़ एवं पंचकूला के स्थानीय आर्यसमाजों में रविवारीय सत्संगों में जब भी प्रवचन करते न तो आने-जाने का खर्चा लेते और न ही कोई दक्षिणा लेते। इसके विपरीत अपनी ओर से आर्यसमाज को दान देकर जाते।

पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ के पुस्तकालय में प्रातः-सायं शोध कार्य के अध्ययन में समय लगाते। उनका शोध कार्य Mysticism and Sybolism in Aitareya and Taittiriya Aranyakas (Hermit Texts) नई दिल्ली से सन् १९७७ ई. में प्रकाशित हुआ। सेवानिवृति के पश्चात् २० वर्षों के बीच उन्होंने मौलिक योग्यता से संचित अपने अथक परिश्रम से तीन नामचीन ग्रन्थ 'Spiritual Exaltation of Om' जो १९९७ से प्रकाशित हुआ। दूसरा ग्रन्थ 'आनन्दवर्धिनी' हिन्दी में होशियारपुर के प्रसिद्ध शोध संस्थान से २००६ में प्रकाशित हुआ। उनका तृतीय ग्रन्थ 'Pave your Way to good Conduct and Happiness' २००८ में प्रकाशित हुआ तथा इस शृंखला में चतुर्थ ग्रन्थ कठोपनिषद् जो अब सितम्बर में प्रकाशित हुआ है। इनके लेख भी समाचार पत्रों में तथा आर्यजगत् की पत्रिकाओं में छपे हैं। उपरोक्त ग्रन्थों के कारण उनकी मौलिक योग्यता के आधार पर उनको International Biographical Centre (U.K.) द्वारा Top 100 Professionals २०१५ में सम्मलित किया। आर्यसमाज के लिए यह गर्व की बात है। उनके उपरोक्त उच्च स्तरीय बौद्धिक स्तर के कार्य के लिए आई.बी.सी. द्वारा मैडल एवं प्रशस्ति पत्र भी दिया गया। उनके सम्मान से आर्य जगत् गौरवान्वित हुआ है।

कुछ तड़प–कुछ झड़प

– राजेन्द्र जिज्ञासु

पूर्वजों का मनन–चिन्तन व युक्तियाँ:– माननीय आचार्य सोमदेव जी की पुस्तक 'जिज्ञासा–समाधान' के प्रथम भाग का प्राक्कथन लिखते हुए मैंने आर्यसमाज की शंका–समाधान की परम्परा की ओर आर्यों का ध्यान खींचा है। इस परम्परा के जनक महर्षि दयानन्द जी महाराज हैं। इस परम्परा को अखण्ड बनाना हमारा पवित्र कर्त्तव्य है। पं. गुरुदत्त जी, पं. लेखराम जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी, पं. गणपति शर्मा, पं. धर्मभिक्षु, पं. रामचन्द्र देहलवी, पं. नरेन्द्र जी आदि ने जान जोखिम में डालकर इस परम्परा को अखण्ड बनाया है। इस स्वर्णिम इतिहास में हम भी नये–नये अध्याय जोड़ें।

मैंने प्राक्कथन में सुझाया है कि प्रत्येक आर्य वक्ता व लेखक को शंका–समाधान, प्रश्नोत्तर करते हुए पूर्वजों का नाम ले–लेकर महत्त्वपूर्ण प्रश्नों के उनके द्वारा दिये गये मौलिक उत्तर जोड़ने चाहिए। पूर्वजों के साहित्य की सूचियाँ देने से कुछ न बनेगा। बहुत प्रामाणिकता से उनके दिये उत्तर उद्धृत किये जायें। कुछ उदाहरण देते हैं–

१. पं. लेखराम जी ने शैतान द्वारा पाप करवाने पर लिखा है– "**वास्तव में शैतान को पाचन वटी मानकर पापों से बचना छोड़ दिया।**"

२. ऋषि ने खाने–पीने से बहिश्ती मल विसर्जन करेंगे तो दुर्गंधि व प्रदूषण होगा तो गंदगी मल–मूत्र कौन उठायेगा? यह प्रश्न किया तो मौलाना सना उल्ला ने लिखा कि यह बेगार काफ़िरों से ली जायेगी। इस पर पं. चमूपति जी ने लिखा– "तो क्या दोज़ख (नरक) भी उनके साथ बहिश्त में जायेगा अथवा स्वल्प काल के लिये वे नरक से छुटकारा पायेंगे?"

३. बहिश्त में जब सुख–सुविधायें, खाने के पदार्थ, संसार जैसे होंगे तो स्वास्थ्य रक्षा के लिए परिश्रम, पुरुषार्थ करने की क्या व्यवस्था होगी? पं. चमूपति जी का यह प्रश्न कितना स्वाभाविक व मौलिक है!

अपने सिद्धान्तों की पुष्टि में:– हमारे विद्वान् अवैदिक मान्यताओं व पाखण्ड–खण्डन के लिए अच्छे–अच्छे लेख व पुस्तकें लिखते हैं परन्तु अब एक चूक हमारे लेखक कर रहे हैं। अन्य मतों की वेद विरुद्ध बातों की तो चुन–चुन कर चर्चा करते हैं, अवैदिक मतों के साहित्य में वैदिक सिद्धान्तों के पक्ष में लिखे गये प्रमाण अथवा वैदिक धर्म की मान्यताओं की जो रंगत बढ़ रही है, उसका प्रचार नहीं किया जाता। पुराने आर्य विद्वानों से हम यह भी सीखें यथा सर सैयद अहमद लिखते हैं–

(१) "पहले आदम को केवल वृक्षों के फल खाने की आज्ञा दी गई। पशुओं के मांस के खाने की अनुमति नहीं थी।"

(२) 'परोपकारी' में 'तड़प–झड़प' में अमरीका से प्रकाशित नये बाइबिल से प्रमाण दिये गये थे कि सृष्टि की उत्पत्ति के वर्णन में अब शाकाहार का ही आदेश है। माँसाहार का हटा दिया गया है।

(३) आदि सृष्टि में अनेक युवा पुरुष व स्त्रियाँ पैदा की गई, बाइबिल में यह वर्णन पढ़कर ऋषि की जयकार क्यों नहीं लगाई जाती। ऐसे–ऐसे प्रमाण खोज–खोज कर हम सब दें।

(४) ब्रह्माकुमारी वाले बार–बार ईश्वर की सर्वव्यापकता का खण्डन करते हुए कई कुतर्क देते हैं। इससे ईश्वर मल–मूत्र में भी मानना पड़ेगा। जहाँ क्रिया होगी, वहाँ कर्त्ता होगा ही। जहाँ कर्त्ता होगा, वहीं क्रिया होगी। सृष्टि में कहाँ गति नहीं। परमाणु में भी विज्ञान गति मानता है। वेद भी डंके की चोट से यही कहता है। जगत् शब्द ही गति का बोध करवाता है फिर ईश्वर की सर्वव्यापकता में संशय क्या रहा? क्या गंदे नालों में कीड़े–मकोड़े पैदा नहीं होते? इन्हें क्या ईश्वर नहीं बनाता? ईश्वर का नाक ही नहीं, उसे दुर्गंधि क्यों आयेगी? उसका शरीर ही नहीं (अकायम) उसे मल क्यों चिपकेगा? ये कुछ संकेत यहाँ दिये हैं। मैं तो पूर्वजों की इस शैली को ध्यान में रखता हूँ। आगे कभी फिर इस पर लिखा जावेगा।

स्वामी देवव्रत जी का चलभाष आया:– श्री स्वामी देवव्रत जी का दिल्ली से चलभाष आया कि वह अपनी व्याख्यान माला की पुस्तक प्रकाशित करने वाले हैं। इसमें वह ९९ व्याख्यान तो अपने देंगे परन्तु इस पुस्तक का पहला व्याख्यान आप अपने एक पुराने पूजनीय विद्वान् का देंगे। स्वामी जी का यह विचार सुनकर मैं गद्गद् हो गया। हम पं. गुरुदत्त जी, पं. लेखराम जी, पं. गणपति शर्मा जी, पं. अयोध्याप्रसाद जी को प्रमुखता नहीं देंगे तो यह एक आत्मघाती नीति होगी। वर्तमान में माननीय इन्द्रजित् देव जी, आचार्य जी सोमदेव जी की सोच ऐसी देखकर

हर्ष होता है। स्वामी श्री देवव्रत जी ने मुझे एक उत्तम व्याख्यान उपलब्ध करवाने का आदेश दिया है। मैं अवश्य उन्हें सहयोग करूँगा। हमारे सब नये-पुराने वक्ता लेखक स्वामी जी की इस सोच से कुछ सीखें। इस कारण यहाँ इसकी चर्चा की है।

श्री राहुल ने मालामाल कर दिया:- मेरे जीवन की सांझ है। यह मैं जानता हूँ परन्तु बहुत प्रभात काल में मेरी दिनचर्या आरम्भ हो जाती है। कभी-कभी डेढ़ और दो बजे भी खाट छोड़ देता हूँ। प्रातः सात बजे के लगभग ऋषि के मिशन की नौकरी पर डट जाता हूँ। पिताश्री की देन है- आर्यसमाज की रंगत है कि इस आयु में घण्टों कार्य करता हूँ, थकता नहीं। देखने वाले दंग होते हैं। अनेक विषयों पर एक साथ सोचता व कार्य करता हूँ। काया व माया का मोह नहीं है तथापि यह तो उत्कट इच्छा है कि कुछ विशेष कार्य जो मेरे कृपालु आर्य विद्वान् व मेरे उत्साही युवक मुझसे करवाना चाहते हैं, वे मैं सिरे चढ़ा सकूँ।

अभी जब यह 'तड़प-झड़प' पाठकों के हाथों में पहुँचेगी, उससे बहुत पहले अलभ्य स्रोतों, पुस्तकों व पत्र-पत्रिकाओं के सहस्रों पृष्ठ पं. लेखराम वैदिक मिशन के श्री राहुल जी-अकोला (महाराष्ट्र) मेरे पास पहुँचा चुके होंगे। इन सहस्रों पृष्ठों की खोज पर और उनका प्रिण्ट निकालने, मुझ तक पहुँचाने में श्री राहुल जी व उनके साथी आर्यवीरों ने कितना धन लगाया होगा? यह सुधी पाठक अनुमान लगा लें।

इसमें पर्याप्त ऐसी सामग्री है, जिसके बारे में विश्वविद्यालयों में कार्यरत बड़े-बड़े विद्वान् भी कुछ नहीं जानते। यह मैंने चर्चा करके, पूछताछ करके जान लिया है। मैंने एक आर्य इतिहासज्ञ व कुछ पुराने लेखकों की कभी राहुल जी से चर्चा की थी। उन्हें वे नाम याद रहे, वह लगे रहे। लम्बा समय लग गया। उन्होंने मुझे तो मालामाल कर दिया है। ऋषि जीवन पर, देश के इतिहास पर, बलिदानियों पर जो स्रोत अब मेरे पास हैं, उन पर जो कार्य हो सकता है, करूँगा। कार्य आरम्भ हो चुका है।

आर्यसमाज की कीर्ति को चार चाँद लगेंगे। पण्डित लेखराम की विजय पताका चहूँ ओर फहरा दो। ऋषि के प्यारो! यह हमारे प्रारब्ध में होगा, जो हमें इस इतिहास को रचने का गौरव प्राप्त हुआ है। आओ हम सब मिलकर अब कुछ ऐसा कार्य कर दिखायें कि ससार यह जान जाये कि पं. गुरुदत्त, पं. लेखराम जी सृष्टि नियम विरुद्ध चमत्कारों को तो नहीं मानते थे परन्तु उनके नाम के, उनके काम के चमत्कार अब संसार देखेगा। हमारे मुनि महात्मा श्रद्धानन्द, स्वतन्त्रानन्द, नारायण स्वामी, नित्यानन्द, अभेदानन्द, सोमानन्द भले ही किसी के पाप क्षमा करने की ईश्वर से सिफारिश नहीं कर सकते थे। ईश्वर उनके वश में नहीं था, वही ईश्वर के वश में थे। ईश्वर की आज्ञा के पालन करने वाले इन महात्माओं की सतत साधना से ऊर्जा प्राप्त करके ऐसे जीवन दायिनी साहित्य का सृजन करेंगे कि संसार यह देखकर दंग होगा कि इन साधनहीन मुट्ठीभर आर्यों ने इतना बड़ा कार्य कैसे कर दिखाया। पहले तो यह अमेरीका, जर्मनी, फ्रांस, इंग्लैण्ड आदि से यहाँ बैठे-बैठे दस्तावेज खोज लाये और अब नये सिरे से सहस्रों पृष्ठ (जिनका किसी को कतई पता नहीं था) कहाँ से खोद लाये? कोई स्वर्ण मुकुट वाला बाबा इनके साथ नहीं था। कोई सोने के सिंहासन पर बैठा निर्जीव अवतार इनका सहायक नहीं था, फिर इतना कुछ कैसे सम्भव हो गया। दिल्ली, मुम्बई, हरिद्वार, कोलकाता, जालन्धर का कोई मायाधारी अहंकारी इनके साथ नहीं।

यह दर्शनानन्द के, पं. रामचन्द्र देहलवी और पं. शान्तिप्रकाश के प्यारे किसकी साधना के सहारे बिना झोली पसारे आत्मविश्वास से भरपूर हृदय लेकर निकले हैं। इतने ग्रन्थ कैसे छप जायेंगे? इतना बड़ा कार्य कैसे सम्पन्न होगा। जिस सर्वज्ञ सर्वद्रष्टा प्रभु ने गोपीनाथ के अभियोग में आस्तिक शिरोमणि महात्मा मुंशीराम को सब प्रमाण उपलब्ध करवाये थे। वह प्रभु आज भी हमारे अंग-संग है। हमारा प्रभु कहीं ऊपर नहीं। वह हमारे भीतर बाहर हमारा ध्यान रखता है। हम साधनों के पीछे मरने वाले नहीं। अब मुनिवर गुरुदत्त की साधना के फल चखना। अभी से राहुल जी द्वारा प्रेषित सामग्री पर एक दृष्टि डालने के लिए सम्पर्क साध रहे हैं। भले ही इन नये सहस्रों पृष्ठों को कोई और पढ़ ही नहीं सकेगा। कारण? यह सारी सामग्री उर्दू में है।

'मेरे जीवन की साहित्यिक यात्रा' मेरी एक नई पुस्तक प्रेस में जाने वाली है। इसके साथ एक युग समाप्त समझिये। अब राहुल जी द्वारा उपलब्ध करवाई गई सामग्री से मेरे साहित्यिक जीवन की अगली यात्रा आरम्भ हो गई है। ईश्वर की इसी कृपा से यह भी आनन्ददायक व सार्थक ही होगी।

कावड़िये दुर्घटना ग्रस्त:- हिन्दुओं के तीर्थ यात्री वर्षभर दुर्घटना ग्रस्त होते रहते हैं। जड़ बुद्धि, पाषाण हृदय तथाकथित हिन्दू नेता इनके कारण और निवारण पर सोचते

ही नहीं। परोपकारी में हर बार इन दु:खद घटनाओं पर हम रक्तरोदन करते रहते हैं। अभी दूरदर्शन पर बिहार के भोलेभाले काँवड़ियों के मरने का समाचार सुनकर हृदय पर गहरी चोट लगी। रो-रो कर हमारे नयनों में भी नीर नहीं। आर्यसमाज की तो यह अंधविश्वासी हिन्दू समाज सुनता नहीं। राजनेता ही अब तो हिन्दुओं के धार्मिक व्याख्याकार बने बैठे हैं। हम किसको अपना रोना सुनावें। बाबा रामदेव ने भी कभी काँवड़ियों को महिमा मण्डित किया था। काँवड़ियों के काल कराल के गाल में विलीन होने पर बाबा रामदेव भी अभी तक तो मौन हैं।

आर्यसमाज के पाखण्ड खण्डन पर अंधविश्वासी खीजते हैं। अब पता लगा कि अंधविश्वास के पोषकों की कृपा से हिन्दू मरते रहते हैं। **जब प्रत्येक कुरीति हिन्दू संस्कृति के नाम पर महिमा-मण्डित की जायेगी तो विनाश व पतन ही होगा।**

श्री डॉ. हेडगेवार की चेतावनी:- '**राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ-तत्त्व और चिन्तन**' पुस्तक मेरे सामने है। इसके पृष्ठ १९ पर सिद्धान्त और व्यवहार के टकराव या दूरी पर डॉ. हेडगेवार जी की चेतावनी संघ को ही रास नहीं आ रही। ''संसार असार है, यह जीवन मायामय है, आदि तात्त्विक बातें केवल पुस्तकों में ही शोभा देती है।'' इस सोच को आप पतन का कारण मानते हैं। जगत् मायामय है, मिथ्या है। विवेकानन्द भी तो यही मानते थे। जगत् मिथ्या है तो फिर जगत्गुरु किसके गुरु हैं?

''**मुझे एक भी उदाहरण बतावें जहाँ कहीं किसी मनुष्य के केवल पूजा-पाठ करने से सौ रुपये उसके चरणों पर आ पड़े हों। ऐसा तो कभी नहीं होता।**'' यह चिन्तन मनन ऋषि दयानन्द का है। शब्द डॉ. हेडगेवार जी के हैं परन्तु राष्ट्रधर्म ने तो तेलंग स्वामी के चमत्कारों की झड़ी-सी लगा दी थी।

अवतारवादी सोच पतन का एक कारण:- इसी पुस्तक के पृष्ठ ४५ से ४७ तक पढ़िये। इसका बहुत थोड़ा अंश आज देंगे। विस्तार से फिर लिखेंगे। डॉ. हेडगेवार जी के घर एक अतिथि (सम्भवत: उनके मामाजी थे) पधारे। उनको पूजा-पाठ करते देखकर आपने एक प्रश्न पूछ लिया। वह भड़क उठे और बोले, ''आप रामचन्द्र जी और भगवान् का उपहास करते हैं? भगवान् के गुण कभी मनुष्य में आ सकते हैं? हम लोग गुण ग्रहण करने की दृष्टि से नहीं, अपितु पुण्य-संचय और मोक्ष-प्राप्ति के लिए ग्रन्थ पाठ करते हैं।''

इस पर डॉ. हेडगेवार जी ने यह प्रतिक्रिया दी, ''जहाँ कहीं भी कोई कर्त्तव्यशाली या विचारवान् व्यक्ति उत्पन्न हुआ कि बस हम उसे अवतारों की श्रेणी में ढ़केल देते हैं, उस पर देवत्व लादने में तनिक भी देर नहीं लगाते।''

संघ को डॉ. हेडगेवार जी का यह विचार भी रास नहीं आया। गुरु गोलवलकर जी ने उनकी भव्य समाधि बनवा दी और फिर गुरु जी की भी वैसी ही बनानी पड़ गई। डॉ. हेडगेवार जी ने छत्रपति शिवाजी व गुरु रामदास से प्रेरणा लेने को कहा। घिसते-घिसते वे सब घिस गये। सबका स्थान विवेकानन्द जी ने ले लिया। गुजरात के पड़ौस में जन्मे शिवाजी व गुजरात में जन्मे ऋषि दयानन्द को गुजरात से निष्कासित कर दिया गया है। जिस महर्षि दयानन्द पर भाव-भरित हृदय से सरदार पटेल ने अन्तिम भाषण दिया, उस पर अवतारवादियों की इस कृपा पर हम बलिहारी।

पं. पद्मसिंह शर्मा जी की दृष्टि में पं. लेखराम साहित्य:- आर्यसमाजी पत्रों के लेखकों का एक प्रिय **विषय है 'हिन्दी भाषा और आर्यसमाज परन्तु भूलचूक से** भी कभी किसी ने यह नहीं लिखा कि आर्य विचारक, दार्शनिक, समीक्षक, पं. पद्मसिंह जी शर्मा सम्पादक परोपकारी के पहले ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें हिन्दी का सर्वोच्च पुरस्कार मंगलाप्रसाद सबसे पहले दिया गया। आप साहित्य सम्मेलन प्रयाग के प्रधान पद को भी सुशोभित करने का गौरव प्राप्त कर पाये। जब 'कुल्लियाते आर्य मुसाफिर' के नये संस्करण को सम्पादित करने का गौरवपूर्ण दायित्व आर्यसमाज के मनीषियों ने मुझे सौंपा तो पं. लेखराम जी विषयक असंख्य लेख व अनगिनत पुस्तकें मेरे मस्तिष्क में घूमने लगीं।

मन में आया कि आचार्य उदयवीर जी तथा मुंशी प्रेमचन्द जी सरीखे विद्वानों व साहित्यकारों के निर्माता पं. पद्मसिंह जी शर्मा की पं. लेखराम के पाण्डित्य तथा साहित्य पर पठनीय गम्भीर टिप्पणी आर्य जनता की सेवा में रखी जाये। पं. शान्तिप्रकाश जी, पं. देवप्रकाश जी, ठाकुर अमरसिंह जी तथा शरर जी आदि के पश्चात् पूज्य पं. लेखराम जी के साहित्य का तलस्पर्शी ज्ञान रखने वालों का अकाल-सा पड़ गया है।

ऋषि के अन्तिम काल की चर्चा करते हुए पं. पद्मसिंह **जी लिखते हैं कि इसके कुछ समय पश्चात् मिर्जा गुलाम अहमद ने हिन्दू धर्म पर और विशेष रूप से आर्यसमाज पर नये सिरे से आक्रमण करने आरम्भ किये।** कादियानी

मियाँ के आक्रमणों का समुचित उत्तर श्रीमान् पं. लेखराम जी ने दिया और ऐसा दिया कि बायद व शायद (जैसा देना चाहिये था- अनूठे ढंग से)।

फिर लिखा है, ''पं. लेखराम जी के पश्चात् इस शान की, इस कोटि की यह एक ही पुस्तक (चौदहवीं का चाँद) निकली है, जिस पर अत्यन्त गौरव किया जा सकता है।''

यह भी क्या अनर्थ है कि आर्यसमाज के बेजोड़ साहित्यकार का अवमूल्यन करने के लिए कुछ तत्त्व समाज में घुस गये हैं। उनके ऋषि जीवन को तो 'विवरणों का पुलिंदा' घोषित कर अपमानित किया और सहस्रों जनों को धर्मच्युत होने से बचाने वाले उनके साहित्य को अपने पोथी-पोथों से कहीं निचले स्तर का....। अधिक क्या लिखें।

परोपकारी के ऐसे-ऐसे कृपालु पाठक:- 'परोपकारी' पाक्षिक की प्रसार संख्या कभी कुछ सौ तक सीमित थी। आज देश के प्रत्येक भाग के यशस्वी समाजसेवी, जाति रक्षक, विचारक, वैज्ञानिक, गवेषक (अन्य-अन्य मतावलम्बी भी) सैंकड़ों की संख्या में परोपकारी के नये अंक की प्रतिक्षा में पोस्टमैन की राह में पलके बिछाये रहते हैं। इसके लिए सम्पादक जी तथा सभा का अधिकारी वर्ग बधाई का पात्र है। आचार्य धर्मेन्द्र जी, देश के गौरव युवा वैज्ञानिक डॉ. बाबूराव जी, डॉ. हरिश्चन्द्र जी, देश के वयोवृद्ध ज्ञानवृद्ध आयुर्वेद के उपासक, उन्नायक व रक्षक ९२ वर्षीय डॉ. स.ल. वसन्त जी तो इस आयु में केवल गायत्री जप, उपासना व वेद का स्वाध्याय करते हैं। आप सोमदेव जी, धर्मवीर जी, स्वामी विष्वङ् जी तथा इस सेवक को पत्र लिखते ही रहते हैं। आपने अभी-अभी एक पत्र में लिखा है, ''परोपकारी में आपके स्थायी स्तम्भ 'कुछ तड़प-कुछ झड़प' पढ़े बिना आनन्द नहीं आता।''

पाठकों को बता दें कि डॉ. वसन्त जी गुजरात, म.प्र., राजस्थान, हरियाणा में ऊँचे पदों पर रहकर आयुर्वेद की सेवा कर चुके हैं। आप यशस्वी आर्य नेता, आर्य सम्पादक, तपस्वी स्वाधीनता सेनानी लाला सुनामराय जी के दामाद हैं। परोपकारी को ऐसा संरक्षक मिला है। यह बहुत गौरव का विषय है।

ऋषि ने तब क्या कहा था?:- ईसाइयों, मुसलमानों से शास्त्रार्थ के लिए हिन्दुओं ने आमन्त्रित किया था। आत्म रक्षा के लिए तब हिन्दुओं को ऋषि की शरण लेनी पड़ी थी। मुसलमानों ने ऋषि के सामने प्रस्ताव रखा कि हम और आप दोनों मिलकर गोरे पादरियों से टक्कर लें। परस्पर की बातचीत फिर हो जायेगी, पहले इनको हराया जाये। महर्षि ने कहा कि सत्य न स्वदेशी है न विदेशी होता है। हम सत्यासत्य के निर्णय के लिए यहाँ शास्त्रार्थ करने आये हैं, हार-जीत के लिए नहीं।

पाखण्ड कहीं भी हो, पाखण्ड अंधविश्वास कोई भी व्यक्ति फैलावे उसका खण्डन करना आर्यत्व है। आर्यसमाज पर बाहर वाले प्रहार करें तो 'तड़प-झड़प' परमोपयोगी है और कोई नामधारी आर्यसमाजी वैदिक सिद्धान्त विरुद्ध कुछ लिखे व कहे तो उसे कुछ न कहो। इससे आर्यसमाज के उस व्यक्ति की अपकीर्ति होती है। यह क्या दोहरा मापदण्ड नहीं है? आर्यसमाज के अपयश व हानि की तो चिन्ता नहीं। अमुक व्यक्ति गुरुकुल का पढ़ा हुआ है। कोई बात नहीं शिवजी की बूटी आदि का पान करने का समर्थक है। यह क्या वैदिक धर्म प्रचार है? ऋषि दयानन्द सिद्धान्तों का बट्टा-सट्टा अदला-बदली नहीं जानते थे।

- वेद सदन, अबोहर, पंजाब-१५२११६

पुस्तक परिचय

पुस्तक का नाम - मेवाड़ केसरी - महाराणा संग्राम सिंह

रचयिता - यशपालसिंह राठौर

मुद्रक - अम्बिका ऑफसैट, २८/१, प्रेमपुरी, मुजफ्फरनगर, उ.प्र.

मूल्य - १००/- **पृष्ठ संख्या** - १६७

हिन्दी साहित्य में अनेक विधाएँ हैं, उनमें काव्य का अपना महत्व है। भाव, भाषा, लय, हावभाव की कड़ी विचारों को प्रभावित करता है। राजस्थान की धरा पर अनेक वीर-वीराङ्गनाओं ने देशभक्ति का आदर्श प्रस्तुत किया है। इतिहास इससे अछूता नहीं है। कवियों ने भी उन वीरों के प्रति काव्य रचनायें की है। महाराणा प्रताप की शौर्य वीरता हल्दी घाटी कविता के माध्यम से झलकती है। ऐसी ही मेवाड़ केसरी महाराणा संग्रामसिंह पर यशपाल जी ने खण्डकाव्य लिखा है। बन्धु विद्रोह, सांगा का लोदी से युद्ध, रणथम्भोर विजय, बाबर और लोदी युद्ध, पुनर्युद्ध और विश्वासघात अन्य बिन्दुओं के आधार, सैन्य कौशल, वीरता, देश प्रेम, शरीर पर अस्सी घाव होते हुए लोहा लेते हुए अमर होते हैं। काव्य की भाषा सरल हृदयग्राही है। पाठक इसका रसास्वादन कर राणा सांगा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से लाभान्वित हों। आर्य वीरों के लिए अनुपम पुस्तक है। **- देवमुनि, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर**

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर

दिनांक : २५ अक्टूबर से ०१ नवम्बर, २०१५

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान-विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग-साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक-दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य-सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि-उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
६. बाह्य-वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार-पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय-कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन-सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ-मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ

में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

(: मार्ग :)

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

-संयोजक

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

मनुष्यों को उचित है कि परमेश्वर में ही मन बुद्धि को युक्त कर विद्वानों के सङ्ग से विद्या को पा सुखी हो अन्य मनुष्यों को भी इसी प्रकार आनन्दित करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.१४

जैसे विद्वान् लोग ईश्वर की सृष्टि में विद्या से पदार्थों की परीक्षा करके कार्य्यों में उपयोग कर सुखों को प्राप्त करते हैं वैसे ही सब मनुष्यों को इस यज्ञ का अनुष्ठान कर सब सुखों को पहुँचाना चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.२२

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन निःशुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

जैसे मेघ वर्षा समय में अपने जल के समूह से सब पदार्थों को तृप्त करता हुआ उन्नति देता है वैसे ईश्वर भी योगाभ्यास करने वाले योगी पुरुष के योग को अत्यन्त बढ़ाता है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.४०

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

अमर हुतात्मा श्रद्धेय भक्त फूल सिंह के ७४ वें बलिदान दिवस पर

- चन्द्राम आर्य

पिछले अंक का शेष भाग.....

उन्नीस दिन के अनशन से गोचर भूमि छुड़वाना :- आपको गोमाता से बड़ा प्यार था। सन् १९२८ में गुरुकुल के लिए चन्दा करने के लिए जीन्द जिले के ललत खेड़ा गाँव में जाना पड़ा । वहाँ दिन में भी गायों को घरों में बन्धा देखा तो बड़े दु:खी हुए। गाँव वालों ने पूछने पर बताया कि गायों को घूमने के लिए गोचर भूमि नहीं है। आपने गाँव के व्यक्तियों को एकत्रित करके कहा कि ''आप भूमि का लोभ न करें गायों के लिए गोचर भूमि छोडें, जिससे ये चल-फिरकर निरोग रह सकें। परन्तु लोग नहीं माने तो आपने पंचायत के सामने घोषणा की - सुनो, मेरे प्यारे भाइयों , तुम गोचर भूमि को नहीं छोड़ते हो तो मैं अपने जीवन को छोड़ने की तैयारी करता हूँ। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं तब तक अन्न ग्रहण नहीं करुंगा जब तक आप गायों के लिए गोचर भूमि नहीं छोड़ते हैं। आपका अनशन उन्नीसवें दिन पहुँच गया। '' शारीरिक रूप से अत्यन्त दुर्बल हो गये। आपको बेहोशी रहने लगी। गाँव के लोगों ने परस्पर समझाते हुए कहा ''भाइयों , भक्त जी को बचाओ। अनशन के कारण भक्त जी की मृत्यु हो गई तो हम तो मुँह दिखाने के योग्य भी नहीं रहेंगे।'' सबने मिलकर आपके पास आकर कहा ''महाराज, दया करो, अपने इस व्रत को छोड़ो, गोचर के लिए आप जितनी जमीन कहेंगे उतनी जमीन छोड़ देगें। भक्त जी ने सबका धन्यवाद किया। गांव वालों ने गोचर केलिए जमीन छोड़ दी।

धर्म-विमुख बन्धुओं को हिन्दू धर्म में लाने के लिए ग्यारह दिन का अनशन :- जिसके धारण करने से मनुष्य जीवन प्रगति की ओर बढ़ता रहे उसे धर्म कहतेहैं। जो आत्मा से प्रतिकूल हो उसे दूसरे केलिए न करना धर्म है। जिस काम से अन्यों को दु:ख हो उसे अधर्म तथा पाप कहते हैं। संसार में वैदिक धर्म सबसे प्राचीन है। परन्तु इसमें शिथिलता आने के कारण अनेक सम्प्रदायों ने जन्म लिया। जो एक दूसरे को नीचा दिखाने लगे। गुडगांव जिले के होडल व पलवल गांव के जाट जो आर्य थे वे मुस्लिम धर्म में दीक्षित हो गये और मूले जाट कहलाये। आर्य समाज का प्रचार सुनकर वे पुन: वैदिक धर्म में दीक्षित होना चाहते थे। परन्तु विवाह आदि सम्बन्ध भी आर्य जाट उनसे कर लें। आप अपने पण्डितों और साथियों समेत वहाँ पहुचे। परन्तु वहाँ का जैलदार नहीं माना। आपने उस बाधा को रोकने केलिए ११ (ग्यारह) दिन का अनशन किया चौधरी छोटूराम जी के समझाने पर आपने अनशन समाप्त किया। परन्तु शुद्धि का कार्य जारी रखा।

सम्बन्धी बनकर शुद्धि को प्रोत्साहन :- सन् १९२९ में केहर सिंह नामक युवा को पुन: वैदिक धर्म में दीक्षित किया गया। प्रसिद्ध आर्य समाजी श्री गिरधारी लाल जी मटिण्डू ने उस नवयुवक से अपनी पुत्री का वाग्दान किया। इस विवाह में गठवाला गोत भाती बनकर उपस्थित हुआ। इस सारे कार्य के सूत्रधार भक्त जी ही थे। गठवाला गोत के दादा चौधरी घासी राम जी हाथी पर सवार होकर भात के लिए १६०० रुपये लेकर दलबल सहित विवाह में धूमधाम से पहुँचे। वह दृश्य अद्‌भूत था और देखते ही बनता था। इससे सारी खापें प्रेम के कारण एक रूप बन गई थी।

जीवन त्याग की शिक्षा से दो कुटुम्बों की रक्षा :- जागसी गांव में एक बार दो कुटुम्बों में परस्पर विवाद हो गया। विवाद इतना बढ़ा कि एक कुटुम्ब ने दूसरे कुटुम्ब के आदमी को मार दिया। अब जिस कुटुम्ब का व्यक्ति मारा गया वह भी बदला लेने का निश्चय कर चुका था। आषाढ़ी की खेती खेतों में पकी पड़ी थी। गाँव वाले अपनी-अपनी खेती काटकर खलिहानों में डाल चुके थे। परन्तु उन दोनों परिवारों की खेती उजड़ रही थी। किसी व्यक्ति ने आपको यह घटना सुनाई तो आप तो नर्म दिल थे। आप जागसी गाँव पहुँचे। जिस व्यक्ति ने दूसरे कुटुम्ब का व्यक्ति मारा था आप उसके पास पहुँचे और पूछने लगे भाई- ''तुम अपना तथा अपने परिवार का सुख चाहते हो तो सब दु:ख मुझे बताओ।'' यह सुनकर उस व्यक्ति ने सारी घटित-घटना कह सुनाई। उसकी बात सुनकर आपने कहा ''भाई मैं जो कहता हूँ वह सुनो और उस पर आचरण

करो। वह यह है कि तुम मरने वाले के भाई के पास जाकर उससे कहो कि भाई, मुझसे बहुत बड़ी भूल हो गई है। अत: तुम अपने हाथों से मुझे मार डालो। यदि इससे तुमको सन्तोष न मिले तो हमारे जितने व्यक्तियों के मारने से तुझे आत्म सन्तोष हो उतने मैं आपके पास भेज दूँगा। उनको मारकर शान्ति लाभ करो। आपकी बात का इतना प्रभाव पड़ा कि वह अकेला उस मरने वाले के भाई के पास गया और उसके चरणों में गिरकर क्षमा याचना की। इसके बाद उसने कहा भाई मुझ से भूल हो गई है तुम उस भूल का दण्ड मुझे मार कर दो। यदि इससे आपको सन्तोष न हो तो मेरा सारा परिवार आपके चरणों में है। यह कहकर वह बालक की तरह रोने लगा जब उसने अपने विरोधी के अहंकार विहीन, विनम्र शब्द सुने तो वह द्रवित हो गया। उसने उसे चरणों से उठाकर अपनी छाती से लगा लिया। वह उससे बोला भाई। मेरा सारा दु:ख दूर हो गया। आज से तुम मेरे अपने भाई हो। दोनों कुटुम्ब वालों ने आपके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की।

रोहतक में गोरक्षा सम्मेलन में पं. मदनमोहन मालवीय जी के नेतृत्व में आर्य समाज की ओर से गोरक्षा का अद्भुत एवं सफल सम्मेलन किया जिसके आप स्वागताध्यक्ष थे। आपको मालवीय जी के साथ हाथी पर बैठने का आग्रह मालवीय जी व आर्यजनों ने किया। परन्तु आप आर्य जनों के साथ पैदल ही चलते रहे।

यवनों से अपहृत कन्या को वापिस लाना:- एक दिन भक्त जी गुरुकुल में बैठे गुरुकुल की आर्थिक दशा को ठीक करने के विषय में गुरुकुल वासियों से मन्त्रणा कर रहे थे। उस समय घबराया हुआ एक व्यक्ति आपके पास आया। रोता हुआ वह आपके पाँवों में गिर पड़ा। उसको धैर्य बन्धाते हुए आपने कहा बताओं मुझसे क्या चाहते हो? मैं तुम्हारी यथाशक्ति सहायता करुँगा, उसने कहा मेरा नाम नेकीराम है। मै सिरसा जांटी गाँव का रहने वाला हूँ। मेरी पोती को मेरे विरोधियों ने उठवा लिया है। वह अब गूगाहेड़ी के मुसलमान राजपूतों के पास है। मैं कई बार लेने गया परन्तु उन्होंने नहीं दी। भक्त जी ने सारी बात सुनकर कहा तुम जाओ तुम्हारी पोती तुमको मिल जायेगी। इसके बाद आपने निदाना और फरमाना गाँव की पंचायत की तथा पंचायत में कहा, ''भाइयो, गरीब जाट की लड़की यवन रांग्घड़ राजपूत जबरदस्ती अपने गाँव गुगाहेडी में रोके हुए हैं।'' पंचायत के प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने दबाव देकर गुगाहेडी के रांग्घड़ राजपूतों से कहा यह जांटी गांव की लड़की वापिस कर दो नहीं तो अब तुम अपनी लड़कियों की खैर मनाना। इस धमकी के दबाव में आकर वह लड़की उस पंचायत को रांगघड राजपूतों ने सौंप दी और वह लड़की का दादा नेकीराम भक्त जी तथा उन सबका धन्यवाद करके अपनी पोती को प्रसन्नता पूर्वक साथ ले गया।

कन्या गुरुकुल खानपुर की १९३६ में स्थापना:- उस समय कन्याओं को पढ़ाना गांव वाले आवश्यक नहीं मानते थे। फिर भी भक्त जी ने घर-घर जाकर कन्याओं को पाठशाला में भेजने को कहना पड़ा। सत्रह छोटी-छोटी कन्याओं के साथ पाठशाला प्रारम्भ की अब तो महाविद्यालय के साथ-साथ विश्वविद्यालय बन गया है।

मानापमान का भाव न रखकर विरोधी की भी सेवा करना:- भैंसवाल गाँव में आर्य समाज का उत्सव था। उसमें भक्त जी भी गुरुकुल के ब्रह्मचारियों व अध्यापकों सहित उपस्थित हुए। ग्राम वालों ने चौधरी लहरी सिंह को भी आमन्त्रित किया हुआ था। भक्त जी ने चुनाव में चौ. टीकाराम जी का साथ दिया था और चौ. लहरी सिंह का विरोध किया था। इससे चौ. लहरी सिंह भक्त जी को अपना विरोधी मानते थे। गर्मी के दिन थे। बहुत गर्मी थी सब पसीने से भीग रहे थे। चौ. लहरी सिंह भी गर्मी से परेशान थे। भक्त जी चौधरी लहरी सिंह के पास जाकर हाथ के पंखे से हवा करने लगे। पंखे की हवा से आनन्द की अनुभूति होने पर जब चौ. लहरी सिंह ने ऊपर की और देखा तो आश्चर्य में पड़ गये कि भक्त जी उन पर हवा कर रहे हैं । आपके हाथ से पंखा लेकर स्वयं हवा करते हुए कहने लगे, भक्त जी आप बहुत महान पुरुष है जो मानापमान को भुला देते हैं।

रोहतक में हैदराबाद सत्याग्रह समिति का प्रधान बन कर सफल नेतृत्व:- हैदराबाद निजाम की धर्मविरोधी नीतियों का प्रतिकार करने केलिए सार्वदेशिक सभा के तत्कालीन प्रधान महात्मा नारायण स्वामी के नेतृत्व में सन् १९३९ में सत्यागृह का बिगुल बजा। हरियाणा में भी इस सत्याग्रह में सम्मिलित होने केलिए उत्साही आर्य युवकों व पुरुषों ने रोहतक आर्य सत्याग्रह समिति का सर्वसम्मति से आपको प्रधान चुन लिया। आपने गुरुकुल के प्रथम

शिष्य आचार्य हरीशचन्द्र के नेतृत्व में पहला जत्था भेजा। दूसरा जत्था स्वामी ब्रह्मानन्द जीके नेतृत्व में भेजा इसमें गुरुकुल के स्नातक, अध्यापक ब्रह्मचारियों व ग्रामीण तथा शहरी जनता ने अपना तन-मन-धन से पूर्ण सहयोग दिया यह युद्ध छ: मास तक चला।

दलितों का कुआँ बनवाने केलिए २३ दिन का कठोर अनशनव्रत:- सन् १९४० की बात है कि आप एक दिन प्रात: काल के समय वट-वृक्ष के नीचे कन्या गुरुकुल खानपुर में समाधिस्थ हुए बैठे थे। ईश्वर का गुणगान करते हुए जब आपने आँखे खोली तो आपको सामने प्रतीक्षा करते हुए चार व्यक्ति दिखाई दिए। जब आपने उनकी ओर दृष्टि घुमाई तो उन चारों व्यक्तियों ने आपके चरण पकड़ कर रो-रोकर आँसुओं से आपके पाँव धो डाले। आपके पूछने पर उन्होंने बताया कि हम मोठ गाँव के रहने वाले चमार हैं। हम कुएं के जल के बिना बड़े तंग हैं। हमने गाँव के जमीदारों से इजाजत लेकर कुआं बनाना प्रारम्भ किया। कुएं में नीमचक भी डाल दिया। किसी के बहकावे में आकर मुसलमान रांघड़ों ने कूएं में डाला हुआ नीमचक निकाल कर बाहर फेंक दिया और हमको डराया धमकाया। हमने बार-बार हाथ जोड़कर प्रार्थना की परन्तु वे टस से मस नहीं हुए। हमको किसी ने सुझाया कि आप हरियाणे के सन्त भक्त फूलसिंह जी के पास जाओ, वे तुम्हारे दु:ख का निवारण करेंगे। अत: अब हम आपके श्री चरणों में उपस्थित हुए हैं। उनकी बात सुनकर उनको धैर्य बन्धाते हुए आप ने कहा मैने आपकी बात सुन ली, आपके कष्ट को दूर करने का मैं यथोचित उपाय करुंगा। सोच विचार करने के बाद आप जीन्द से असेम्बली के सदस्य चौधरी मनसाराम जी को साथ लेकर मोठ गाँव में पधारे। आपने गांव की पंचायत बुलाई और उनके सामने चमारों के कुएं की बात करते हुए कहा ''भाइयो मैं साधु आप लोगों से यह भिक्षा मागंने आया हूँ कि आप पहले की तरह इन भाइयों को कुआं बनाने की आज्ञा प्रदान करें। ये गरीब हैं आप मालिक है। आपकी दया से जब ये कूएं का जल पान करेंगे तो आपको आशीष देंगे। इस समय एक बूढ़े मुसलमान रांग्घड ने उन युवा यवनों की ओर संकेत करके कहा कि लड़कों तुम इस चमारों के बाबा को पकड़ो और दूर जंगल में छोड़ आओ यहां खड़ा-खड़ा तो यह यूं ही बक बक करता रहेगा।'' वे नवयुवक आपको तथा आपके साथी मनसाराम जी को पकड़ कर अलग-अलग रास्तों से जंगल में दूर छोड़ आये। उस समय रात के ग्यारह बजे थे । वे आपको गालियाँ देते हुए घसीटते हुए मखौल उड़ाते हुए बाल नोचते हुए मारते -पीटते हुए अधमरा करके कहीं जंगल में पटक कर आये थे। गर्मी का मौसम था, भूख प्यास से संतप्त आप पृथ्वी पर पड़े जीवन की अन्तिम घडियाँ गिन रहे थे तभी वहीं से होकर एक लालाजी दूसरे गाँव में जा रहे थे। तब उस लाला ने देखा कि एक साधु लम्बी-लम्बी श्वासें ले रहा है। वह आपके पास गया और आपको कहीं से लाकर पानी पिलाया आपकी दयनीय दशा को देखकर लाला जी ने हाथ का सहारा देकर आपको उठाया तथा पास की ढाणी गाँव में छोड़कर चला गया। गाँव वालों ने आपकी सेवा की और आपकी इच्छानुसार नारनौंद गाँव में पहुँचा दिया। उधर से श्री मनसाराम जी भी जंगल में आपको ढूंढते हुए नारनौंद गाँव में पहुँचे । आपने श्री मनसाराम जी के आते ही इतना कष्ट पाकर भी अनशन व्रत प्रारम्भ कर दिया । आपके इस अनशन की पांचवें दिन गुरुकुल भैंसवाल तथा कन्या गुरुकुल खानपुर में सूचना पहुँची। सूचना मिलते ही गुरुकुल से चौधरी स्वरूपलाल, आचार्य हरीशचन्द्रजी, आचार्य विष्णुमित्रजी, श्री अभिमन्यु जी बहन सुभाषिणी जी, गुणवती जी अपने छात्र-छात्राओं सहित नारनौद गाँव पहुँचे। इस अवसर पर आपके अनशन व्रत की समाप्ति के लिए आर्य समाज के सर्वस्व स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज, स्वामी ब्रह्मानन्दजी, सेठ जुगलकिशोर जी बिड़ला, श्री वियोगी हरि, चौधरी सूरज मल जी, हिसार, चौ. टीकारामजी सोनीपत, चौ. माडूसिंह जी रोहतक, चौधरी छाजूराम जी जज देहली, चौधरी अमी लालजी रईस सिसाह, चौ. शादीरामजी योगी सोनीपत, दादा घासीराम जी अहुलाना चौधरी जानमुहम्मद मेयर रोहतक नगर, चौधरी शाफे अली गोहना, चौ. मुख्त्यार सिंह जी पलवल आदि पहुँचे। अनशन व्रत को समाप्त करवाने के लिये सेठ छाजूराम जी अलखपुरा का कलकता से तार आया। महात्मा गाँधी का भी तार आपको मिला कि अनशन समाप्त कर दें। चौधरी छोटूराम जी ने भी पत्र द्वारा आपको अनशन व्रत तोड़ने की प्रार्थना की । आपको उपवास करते हुए जब १९ दिन हो गये बहुत समझाने पर भी दुराग्रह यवन नहीं माने और अनशन के कारण आपका शरीर बिल्कुल निर्बल हो गया, तब चौधरी छोटूराम जी मन्त्री

पंजाब सरकार ने डी.सी. हिसार के नाम एक तार भेजा जिसमें चौधरी साहब ने लिखा कि तुरन्त मोठ में कुआं बनवाया जावे। कुआं भक्त जी की इच्छानुसार बने। जो इस कार्य में रुकावट डाले उसका कठोरता से दमन किया जाये। माननीय मन्त्री जी की आज्ञा मिलते ही डी.सी. ने भक्त जी के पास सूचना भेजी की आप कुआं बनवा लें। कोई भी इसमें रुकावट नहीं डालेगा। यह जिम्मेदारी मेरी है। आपकी इच्छानुसार तीन दिन में कुआं बनकर तैयार हो गया। जब कुआं बनकर तैयार हो गया तो आपको सूचना भेजी गई। आपने अपने परम विश्वासपात्र चौ. रामनाथ माजरा और चौ. नौनन्द सिंह जी को अपनी तसल्ली के लिए कुएं पर भेजा। उनके बताने पर कि कुआं तैयार हो गया तो आप बहुत प्रसन्न हुए। आपको कुएं पर ले जाने के लिए रथ सजाया गया। आर्य जयघोषों के साथ आपको उस रथ में बिठाया गया। आपके रथ के पीछे सहस्रों नर-नारियाँ पैदल चलकर जयघोषों के साथ आपको आनन्दित कर रहे थे। पतिव्रता देवियाँ दूर से ही सिर झुका-झुकाकर आपको प्रणाम कर रही थी। शरीर से निर्बल हुए जब आप शनैः शनैः लोगों का सहारा लेकर कुएं पर पहुँचे तो वह दृश्य रोंगटे खड़े करने वाला था। आपके शरीर की अतिक्षीणता को देखकर कतिपय भक्त तो वहाँ पर रोने लगे। कुएं पर पहुँचकर आपने एक हरिजन भाई से उसी कुएं का पानी खिंचवाया तथा उस जल का पान किया। उस समय हमारे चमार भाई कितनी कृतज्ञता भरी दृष्टि से आपको देख रहे थे, इसको तो वे ही समझ सकते हैं। जिस युवक ने आपको धक्का देते हुए मोठ गाँव से बाहर निकालते हुए दु:ख दिया था वह अब आपका परम भक्त बन गया था, उसने स्वयं अपने हाथ से सन्तरे का रस निकाल कर आपको पिलाया। इतना ही नहीं वह आपके चरणों में गिरकर रोता हुआ क्षमा याचना करने लगा। आपने उसे चरणों से उठाकर अपने गले लगा लिया। इसके बाद स्वास्थ्य लाभ के उपरान्त आर्य सार्वदेशिक सभा के तत्वाधान में दिल्ली में आपका भव्य स्वागत किया गया। ठीक ही कहा है-

"सेवा धर्मः परम गहनो योगीनाममप्यगम्यः।"

लोहारु काण्ड:- सन् १९४० की घटना है। हैदराबाद के निजाम की तरह लोहारु का मुसलमान शासक हिन्दुओं पर तो अत्याचार करता थाऔर मुसलमानों को अधिक अधिकार देकर उनका साहस बढ़ाता था। लोहारु आर्य समाज के मन्त्री ठाकुर भगवान सिंह जी को तो उसने बहुत कष्ट दिये थे। ठाकुर जी आर्य नवयुवक थे। उन्होंने अपनी सहायता के लिए भक्त जी के पास जाना उपयुक्त समझा। समय निकालकर वह स्वयं भक्त जी के पास पहुंचा। भक्त जी ने सहानुभूतिपूर्वक उनकी सारी कष्ट कहानी सुनी। ठाकुर जी को आश्वस्त कर आप स्वयं नवाब से मिलने के लिए गये आपने नवाब को आर्य समाज के प्रचार की सम्पूर्ण समाज के हित की बातें प्रेम-पूर्वक समझाई। आपकी बातों के उत्तर में नवाब ने कहा कि आपकी बातों से मैं सहमत हूँ। आप आर्य समाज का उत्सव कीजिए उसमें मैं भी सम्मिलित होऊँगा।

सन् १९४१ के अप्रैल मास में आर्य समाज लोहारु का उत्सव रखा गया। यह उत्सव आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से श्रीयुत स्वामी स्वतन्त्रानन्द के नेतृत्व में होना निश्चित हुआ। पण्डित समर सिंह जी वेदालंकार महोपदेदशक व चौ. नौनन्दसिंह अपनी-अपनी भजनमण्डली के साथ उत्सव में पधारे। आप सबके लोहारु पहुंचने पर सबसे पहले जलूस निकालने काआयोजन किया गया। आपने बहुत रोका परन्तु नवयुवकों के जोश के आगे आप चुप हो गये। जलूस में सबसे आगे पूज्य स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी, आप, चौ. नौनन्द सिंह व चौधरी गाहड़ सिंह थे। जलूस जैसे ही नगर के अन्दर पहुँचा तो वहाँ पहले से ही लड़ने के लिए नवाब के सिपाही तैयार खड़े थे। उन्होंने आप सब पर लाठियों से प्रहार करने शुरु कर दिये। प्रहारों से भक्त जी तथा नौनन्द सिंह जी वहीं मूर्छित होकर गिर पड़े आपको २४ घण्टे बाद होश आया। इतना ही नहीं नवाब ने आपको तथा नौनन्द सिंह जी को अपराधी बना दिया । जब यह सूचना गुरुकुल भैंसवाल पहुँची तो वहाँ के अधिकरी गण गुरुकुल से चलकर हिसार के डी.सी. महोदय का पत्र लेकर दादा घासी राम जी श्री स्वरूपलाल जी, श्री हरिशचन्द्र जी, श्री योगेन्द्र सिंह जी लोहारु स्टेट में पहुँचे। वहाँ वे नवाब से मिले और आपको मुक्त करा कर आपका इलाज कराने केलिए इरविन अस्पताल दिल्ली ले गये। आपको स्वास्थ्य लाभ करने में दो मास लग गये। तब आपकी वीरता, धीरता एवं निर्भयता की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई।

बलिदान:- बार-बार के अनशनों, व्रतों जलूसों पर

लाठी प्रहारों से आपका शरीर काफी दुर्बल होता जा रहा था। दोनों संस्थाओं के संचालन का भार भी काफी बढ़ रहा था। गुरुकुल खानपुर का अधूरापन भी आपको अखर रहा था। इसके अतिरिक्त आपके शुद्धि कार्य से मुसलमान भी आपसे अप्रसन्न हो कर आपके विरोधी बन गये थे। वे आपको मारने के अवसर की तलाश में थे। आपने अपने प्रेमियों से कहना प्रारम्भ भी कर दिया था कि आप मेरा सहारा छोड़कर इन संस्थाओं को सम्भालो। भक्त जी महाराज के ये आप्त शब्द थे। १४ अगस्त सन् १९४२ तदनुसार श्रावण बदी द्वितीया सम्वत् १९९९ को रात्रि के ९ बजे आप अपने श्रद्धालुओं के साथ भगवत् ध्यान में लीन थे। उस समय बैट्री हाथ में लिये ५ यवन घातक सिपाही के वेश में एक बन्दूक और दो पिस्तोलों के साथ आ धमके। उन नराधमों ने भक्त जी के मुख पर बैट्री से प्रकाश डालते हुए कड़क कर कहा, कि तुम यहाँ फौजी भगोड़ों को रखते हो, तुम सरकार से गद्दारी करते हो। उनकी बात सुनकर भक्त जी महाराज ने कहा, यहाँ कोई फौजी भगोड़ा नहीं है यह स्थान तो लड़कियों के पढ़ने का है। आप हम पर पूर्ण विश्वास करें। उन नराधमों ने भक्त जी को दाढ़ी से पहचान लिया फिर उनमें से एक ने आप पर बैट्री का प्रकाश डाला तथा दूसरे ने पिस्तौल के तीन फायर किये। गोली लगी। आपका सिर खाट के नीचे लटक गया। मानों मारने वाले शत्रु को भी प्रणाम कर रहा हो। मुख से ओ३म् निकला पास बैठे असहाय प्रेमियों के मुख से आह निकली। आप अपने शरीर का मोह त्याग कर परम पिता परमात्मा की सुन्दर गोद में जा विराजे। जैसा कि आपका जीवन वीरता से भरा था वैसे ही आपकी मृत्यु भी वीरता से हुई।

मरना भला है उसका जो जीता है अपने लिए,
जीता वह है जो मर चुका परोपकार के लिए,
हमदर्द बनकर दर्द न बांटा तो क्या जिए,
कुछ दर्द दिल भी चाहिये इंसान के लिए

अन्य भी कहा है:-

जीने वाले ऐसे जी, मरने वाले ऐसे मर,
कुछ सबक दे जाय, तेरी जिन्दगी भी मौत भी।

- १३२५/३८, 'ओ३म् आर्य निवास', गली नं. ५, विज्ञान नगर, आदर्श नगर, अजमेर। दूरभाष- ०९८८७०७२५०५

ऋषि मेला २०१५ हेतु स्टॉल आवंटन

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष ऋषि मेला २०,२१,२२ नवम्बर शुक्र, शनि, रविवार २०१५ को ऋषि उद्यान में आयोजित होगा। उसमें आर्य जगत् का साहित्य, हवन सामग्री, अन्यान्य सामग्री की स्टाँलें लगती हैं। प्रति स्टॉल किराया १००० रु. निर्धारित है। जिसकी राशि पहले जमा होगी उस क्रम से स्टॉलों का आवंटन होगा। जिन महानुभावों को जितनी स्टॉलों की आवश्यकता है, उसी अनुरूप राशि बैंक ड्राफ्ट द्वारा या नकद जमा करावें।

स्टॉल सुविधा:- कारपेट, दो टेबल, दो कुर्सी, २ ट्यूब लाईट प्रति स्टॉल। **स्टॉल साइज-** ७.५×१५ फीट।

ध्यातव्य: - **१.** स्टॉल में रखी टेबल, कुर्सी आदि पूर्व निर्धारित सामग्री को इधर-उधर या अन्य स्टॉल में न बदलें। **२.** अतिरिक्त सामग्री की आवश्यकता हो तो टेन्ट हाउस के कर्मचारी से सम्पर्क कर प्राप्त करें तथा निर्धारित राशि तुरन्त भुगतान करें। **३.** बिस्तर रजाई, चादर, तकिया को टेन्ट हाउस कर्मचारी से प्राप्त कर निर्धारित राशि जमा करा दें। **४.** स्टॉल व्यवस्थापक से स्टॉल संख्या, राशि की रसीद दिखाकर प्राप्त करें। बिना पूर्व अनुमति के स्टॉलों में सामान न रखें, न अधिकृत करें। **५.** आपके सक्रिय सहयोग व अनुशासन की अपेक्षा है। अनियमितता को स्थान न देवें।

ईश्वर का आश्रय न करके कोई भी मनुष्य प्रजा की रक्षा नहीं कर सकता। जैसे ईश्वर सनातन न्याय का आश्रय करके सब जीवों को सुख देता है वैसे ही राजा को भी चाहिये कि प्रजा को अपनी न्याय व्यवस्था से सुख देवे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.३९

जब तक सब की रक्षा करने वाला धार्मिक राजा वा आप्त विद्वान् न हो तब तक विद्या और मोक्ष के साधनों को निर्विघ्नता से पाने के योग्य कोई भी मनुष्य नहीं होता है और न मोक्षसुख से अधिक कोई सुख है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५२

वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत

वेदभाष्य, वेदभाषाभाष्य, मूलवेद, वेदांगप्रकाश और वैदिक साहित्य

पिछले अंक का शेष भाग.......

क्रमांक नाम पुस्तक	मूल्य
१८५. श्वसन क्रियाएं एवं प्राणायाम (सी.डी.)	४०.००
१८६. मोटापा (सी.डी.)	४०.००
१८७. योगनिद्रा (सी.डी.)	३०.००
१८८. ध्यान (सी.डी.)	३०.००
१८९. योगनिद्रा (कैसेट)	३०.००
१९०. ध्यान (कैसेट)	३०.००
श्री रावसाहब रामविलास शारदा	
१९१. आर्य धर्मेन्द्र जीवन (सजिल्द) (स्वामी दयानन्द जी का जीवन चरित्र)	१००.००
डॉ. रामप्रकाश आर्य	
१९२. महर्षि दयानन्द सरस्वती (जीवन एवं उनकी हिन्दी रचनाएं)	२५०.००
महर्षि गार्ग्य	
१९३. सामपद संहिता सजिल्द (पदपाठः)	२५.००
डॉ. ब्रह्मानन्द शर्मा	
१९४. वेदार्थ विमर्शः (वेदार्थ पारिजात खण्डनम्)	२५.००
१९५. डॉ. भवानीलाल भारतीय अभिनन्दन ग्रन्थ (बढ़िया)	५१.००
१९६. डॉ. भवानीलाल भारतीय अभिनन्दन ग्रन्थ (साधारण)	३१.००
महामहोपाध्याय पं. आर्यमुनि	
१९७. वाल्मीकि रामायण-(सजिल्द) आर्य टीका सहित (प्रथम भाग)	१६०.००
१९८. वाल्मीकि रामायण-(सजिल्द) आर्य टीका सहित (द्वितीय भाग)	१६०.००

क्रमांक नाम पुस्तक	मूल्य
१९९. महाभारत आर्य टीका (प्रथम भाग)	
२००. महाभारत आर्य टीका (द्वितीय भाग)	
Prof. Tulsi Ram	
201. The Book Of Prayer (Aryabhivinaya)	35.00
202. Kashi Debate on Idol Worship	20.00
203. A Critique of Swami Narayan Sect	20.00
204. An Examination of Vallabha Sect	20.00
205. Five Great Rituals of the Day (Panch Maha Yajna Vidhi)	20.00
206. Bhramochhedan (New Edition)	25.00
207. Bhranti Nivarana	35.00
208. **Atmakatha**- Swami Dayanand Saraswati	20.00
209. Bhramochhedan	5.00
210. Chandapur Fair	5.00
DR. KHAZAN SINGH	
211. Gokaruna Nidhi	12.00
DEENBANDHU HARVILAS SARDA	
212. Life of Dayanand Saraswati	200.00
SWAMI SATYA PRAKASH SARASWATI	
213. Dayanand and His Mission	5.00
214. Dayanand and interpretation of Vedas	5.00
२१५. पवित्र धरोहर (सी.डी.)	५१.००
आचार्य उदयवीर शास्त्री	
२१६. जीवन के मोड़ (सजिल्द)	२५०.००

अन्य लेखकों के ग्रन्थ–निम्न पुस्तकों पर कमीशन देय नहीं है।

क्रमांक नाम पुस्तक	मूल्य
श्री गजानन्द आर्य	
२१७. वेद सौरभ	१००.००
२१८. Gokarunanidhi (Eng.)	२५.००
डॉ. सुरेन्द्र कुमार (भाष्यकार एवं समीक्षक)	
२१९. मनुस्मृति	३००.००
२२०. महर्षि दयानन्द वर्णित शिक्षा पद्धति	१५०.००
सत्यानन्द वेदवागीशः	
२२१. दयानन्द वेदभाष्य भावार्थ प्रकाश (उत्तरखण्ड)	३००.००
२२२. दयानन्द वेदभाष्य भावार्थ प्रकाश (पूर्वखण्ड)	३५०.००
डॉ. वेदपाल सुनीथ	
२२३. माध्यन्दिन शतपथीय यूप ब्राह्मणों का भाष्य (अजिल्द)	५०.००
२२४. शतपथ ब्राह्मण के पशुयाग का भाष्य(अजिल्द)	७०.००
२२५. शतपथीययूप ब्राह्मण का भाष्य एवं शतपथ ब्राह्मण के पशुयाग का भाष्य (सजिल्द)	१५०.००
२२६. यजुर्वेद-भाष्य विवरणम् (विशिष्ट संस्करण)	५०.००
२२७. यजुर्वेद-भाष्य विवरणम् (साधारण संस्करण)	२५.००
आचार्य सत्यव्रत शास्त्री	
२२८. उणादिकोष	८०.००
२२९. दयानन्द लहरी	५०.००
प्रो. रामप्रसाद वेदालंकार	
२३०. वेदाध्ययन (भाग-१)	६.००
२३१. वेदाध्ययन (भाग-२)	७.००
२३२. वेदाध्ययन (भाग-१०)	६.००
२३३. प्रार्थना सुमन	४.००
२३४. ईश्वर! मुझे सुखी कर	
२३५. कौन तुझको भजते हैं?	८.००
२३६. पावमानी वरदा वेदमाता	९.००
२३७. प्रभात वन्दन	६.००

क्रमांक नाम पुस्तक	मूल्य
२३८. भक्ति भरे भजन	११०.००
२३९. विनय सुमन (भाग-३)	६.००
२४०. वेद सुधा	८.००
२४१. वेद पढ़ो और पढ़ाओ	१००.००
२४२. वैदिक रश्मियाँ (भाग-२)	६.००
२४३. वैदिक रश्मियाँ (भाग-३)	५.००
२४४. वैदिक रश्मियाँ (भाग-४)	९.००
२४५. वैदिक रश्मियाँ (भाग-५)	६.००
२४६. Quest for the Infinite	20.00
२४७. वैदिक आदर्श परिवार (बड़ा आकार)	१५०.००
श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु	
२४८. गंगा ज्ञान धारा (भाग-१)	
२४९. गंगा ज्ञान धारा (भाग-२)	१६०.००
२५०. गंगा ज्ञान धारा (भाग-३)	१७०.००
२५१. अमर कथा पं. लेखराम	६०.००
२५२. कवि मनीषी पं. चमूपति	१६०.००
२५३. कुरान सत्यार्थ प्रकाश के आलोक में	२००.००
२५४. निष्कलंक दयानन्द	१६०.००
२५५. मेहता जैमिनी	१५०.००
२५६. कुरान वेद की छांव में	१५०.००
२५७. जम्मू शास्त्रार्थ	३०.००
२५८. महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव	२०.००
२५९. श्री रामचन्द्र के उपदेश	२५.००
२६०. धरती हो गई लहुलुहान	३०.००
विविध ग्रन्थ	
२६१. नित्यकर्म विधि तथा भजन कीर्तन	२०.००
२६२. उपनिषद् दीपिका	७०.००
२६३. आर्य समाज के दस नियम	१०.००
२६४. मद्यनिषेध शिक्षित शतकम्	१५.००
२६५. आर्यसमाज क्या है ?	८.००
२६६. जीवन का उद्देश्य	२०.००

२६७.	वेदोपदेश	३०.००
२६८.	सत्यार्थ प्रकाश का समीक्षात्मक अध्ययन	२०.००
२६९.	भगवान् राम और राम-भक्त	२५.००
२७०.	जीवन निर्माण	२५.००
२७१.	१०० वर्ष जीने के साधन नित्यकर्म	२५.००
२७२.	दयानन्द शतक	८.००
२७३.	जागृति पुष्प	८.००
२७४.	त्यागवाद	२५.००
२७५.	भस्मान्तं शरीरम्	८.००
२७६.	जीवन मृत्यु का चिन्तन	२०.००
२७७.	ब्रह्मचर्य का वैज्ञानिक स्वरूप	१०.००
२७८.	कर्म करो महान बनो	१४.००
२७९.	अष्टाध्यायी सूत्रपाठ	५०.००
२८०.	आनन्द बहार शायरी	१५.००
२८१.	वैदिक वीर गर्जना	२५.००
२८२.	पर्यावरण विज्ञानम्	२०.००

DR. HARISH CHANDRA

283	The Human Nature & Human Food	12.00
284.	Vedas & Us	15.00
285.	What in the Law of Karma	150.00
286.	As Simple as it Get	80.00
287.	The Thought for Food	150.00
288.	Marriage Family & Love	15.00
289.	Enriching the Life	150.00

डॉ. वेदप्रकाश गुप्त

२९०.	दयानन्द दर्शन	६०.००
२९१.	Philoshophy of Dayanand	150.00
२९२.	महर्षि दयानन्द का समाज दर्शन	२०.००

२९३.	आर्य सिद्धान्त और सिख गुरु	६०.००
२९४.	आध्यात्मिक चिन्तन के क्षण (आचार्य सत्यजित् जी)	४०.००
२९५.	सत्यासत्य निर्णय	२५.००
२९६.	कलैण्डर-गायत्री मन्त्र, सन्ध्या सुरभि, महर्षि दयानन्द की शिक्षाएँ-प्रत्येक	२५.००
२९७.	ओ३म् का स्टीकर	१०.००

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं**। अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें। **-संपादक**

मनुष्यों को चाहिये कि पुरुषार्थ से विद्या का सम्पादन, विधिपूर्वक अन्न और जल का सेवन, शरीरों को नीरोग और मन को धर्म में निवेश करके सदा सुख की उन्नति करें। **-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.१४**

चार्वाक दर्शन एवं वेद
(सत्यार्थप्रकाश के द्वादश समुल्लास के आलोक में)

- डॉ. वेद प्रकाश

[वर्ष २०१३ में ऋषि - मेले के अवसर पर आयोजित वेद-गोष्ठी में प्रस्तुत एवं पुरस्कृत यह शोध लेख पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत है।]
-सम्पादक

सृष्टि के प्रारम्भ से ही आर्यावर्त में वेद की प्रतिष्ठा रही है। ईश्वर द्वारा प्रदत्त तथा वैदिक ऋषियों द्वारा अनुभूत वेद ज्ञान सत्यासत्य के निर्णय का एक मात्र आधार रहा है। भारतीय चिन्तन में वैदिक ज्ञान की सर्वोत्कृष्टता इस बात से भी परिलक्षित होती है कि आस्तिकता और नास्तिकता का नियामक भले ही लोक में ईश्वर है, परन्तु शास्त्र की दृष्टि से वेद है। अर्थात् जो वेद को मानता है वह आस्तिक है तथा जो वेद को नहीं मानता , वह नास्तिक है। मनु के शब्दों में 'नास्तिको वेदनिन्दक:'(मनुस्मृति २.११)। परन्तु धीरे-धीरे भारत में वेद मन्त्रों के मनमाने अर्थ किये जाने लगे तथा वैदिक यज्ञों एवं कर्मकाण्ड में आडम्बर, हिंसा आदि अमानवीय भावनाओं का प्रभुत्व बढता गया। परिणामस्वरूप वेद विद्या के स्थान पर अविद्या का प्रसार होने लगा। इसी के परिणामस्वरूप भारत में चार्वाक, जैन एवं बौद्ध दर्शनों का प्रादुर्भाव हुआ। ये दर्शन वेद को प्रमाण नहीं मानते हैं, अत: इन्हें भारतीय दार्शनिक परम्परा में नास्तिक दर्शन कहा जाता है।

चार्वाक दर्शन के सिद्धान्त अन्य दार्शनिक ग्रन्थों यथा ब्रह्मसूत्र शाङ्करभाष्य, कमलशीलकृत तत्त्वसंग्रहपञ्जिका, विवरणप्रणेयसंग्रह, न्यायमञ्जरी, सर्वसिद्धान्तसंग्रह, षड्दर्शनसमुच्चय, तर्करहस्यदीपिका, सर्वदर्शनसंग्रह आदि ग्रन्थों में पूर्वपक्ष के रूप में हुआ है। चार्वाक दर्शन का आधार मुख्य रूप से वेद-विरोध है, जैसा कि इनके वेदविषयक सिद्धान्तों से विदित होता है-

त्रयो वेदस्य कर्त्तारो भाण्डधूर्तनिशाचरा:।

प्रस्तुत शोधपत्र में महर्षि दयानन्द द्वारा सत्यार्थप्रकाश के बारहवें समुल्लास में प्रस्तुत चार्वाक दर्शन के सिद्धान्तों को प्रस्तुत कर उनकी दार्शनिक ग्रन्थों के आधार पर प्रामाणिकता सिद्ध की गयी है। इसके पश्चात् महर्षि दयानन्द द्वारा चार्वाक दर्शन के सिद्धान्तों का खण्डन तथा उनकी वेदानुकूलता प्रस्तुत कर चार्वाक दर्शन के जो सिद्धान्त वेदानुकूल है, उनकी समीक्षा महर्षि दयानन्द द्वारा प्रस्तुत सत्यार्थप्रकाश के बारहवें समुल्लास के सन्दर्भ में की गयी है।

महर्षि दयानन्द द्वारा सत्यार्थप्रकाश के बारहवें समुल्लास में चार्वाक दर्शन के निम्नलिखित सिद्धान्तों को प्रस्तुत किया गया है-

पुनर्जन्म का सिद्धान्त- चार्वाक दर्शन पुनर्जन्म के सिद्धान्त को स्वीकार नहीं करता है। महर्षि दयानन्द ने इस कथन की पुष्टि के लिए १२ वें समुल्लास के प्रारम्भ में बृहस्पति नामक आचार्य का एक प्रसिद्ध पद्य प्रस्तुत किया है -

यावज्जीवं सुखं जीवेन्नास्ति मृत्योरगोचर:।
भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुत:।।

अर्थात् जब तक जीवन है, सुखपूर्वक जीयें। क्योंकि मृत्यु से कुछ भी अगोचर नहीं है। भस्मीभूत होने वाले इस शरीर का पुन: आगमन कहां होगा? अर्थात् मृत्यु के पश्चात् जीव पुन: संसार में नहीं आता है। अत:-

यावज्जीवेत्सुखं जीवेदृणं कृत्वा घृतं पिबेत्।
भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुत:।।[३]

अर्थात् सुखपूर्वक जीने के लिए ऋण लेकर भी घी पीना चाहिए।

महर्षि दयानन्द जीव को अनादि मानते हैं। परलोक के सम्बन्ध में उनका विचार है कि जैसे इस समय सुख दु:ख का भोक्ता जीव है, वैसे ही परजन्म में भी होता है।[४] वेद में पुनर्जन्म के समर्थन में अनेक मन्त्र प्राप्त होते हैं, जिनका सारांश निम्न प्रकार से है- सत्य के ज्ञाता और अहिंसक उन जीवों ने फिर प्राणधारण किया।[५] किसने मुझे

पुनः विशाल पृथिवी पर जन्म दिया।[६] मैं पुनः जन्म लेकर माता-पिता के दर्शन करूँ।[७] कठोपनिषद् का यह प्रसिद्ध वाक्य –

सस्यमिव मर्त्यः पच्यते सस्यमिवाजायते पुनः।[८]

तथा–

योनिमन्ये प्रपद्यन्ते शरीरत्वाय देहिनः।
स्थाणुमन्येऽनुसंयन्ति यथाकर्म यथाश्रुतम्।।[९]

अर्थात् जिसका जैसा कर्म होता है और शास्त्रादि के श्रवण के द्वारा जिसको जैसा भाव प्राप्त हुआ है, उन्हीं के अनुसार शरीर धारण करने के लिए कितने ही जीव अनेक प्रकार की योनियों को प्राप्त हो जाते हैं और अन्य कितने ही स्थावर भाव का अनुसरण करते हैं।

शरीर में चार महाभूतों के योग से चैतन्य-उत्पत्ति – चार्वाक की यह मान्यता है कि हमारा शरीर पृथिवी, जल, अग्नि तथा वायु इन चार महाभूतों के संयोग से बना है। चार्वाक चार ही महाभूत स्वीकार करता है।[१०] वह आकाश को स्वीकार नहीं करता। इस शरीर में इन चार महाभूतों के योग से चैतन्य उत्पन्न होता है। जैसे मादक द्रव्य खाने पीने से मद उत्पन्न होता है, इसी प्रकार जीव शरीर के साथ उत्पन्न होकर शरीर के नाश के साथ ही नष्ट हो जाता है।[११] फिर किसको पाप-पुण्य का फल होगा? अर्थात् शरीर के नष्ट होने के साथ ही जीवन भी नष्ट हो जाता है। अतः पाप-पुण्य का भोक्ता कौन होगा अर्थात् कोई नहीं।

महर्षि दयानन्द इसके समाधान में कहते हैं कि पृथिव्यादि भूत जड़ हैं तथा जड़ पदार्थों से चेतन की उत्पत्ति कभी नहीं हो सकती। मद के समान चेतन की उत्पत्ति और विनाश नहीं होता, क्योंकि मद चेतन को होता है, जड़ को नहीं। पदार्थ नष्ट अर्थात् अदृष्ट होते हैं परन्तु अभाव किसी का नहीं होता। इसी प्रकार अदृश्य होने पर जीव का भी अभाव नहीं मानना चाहिए। जब जीवात्मा सदेह होता है तभी उसकी प्रकटता होती है। जब वह शरीर को छोड़ देता है, तब यह शरीर जो मृत्यु को प्राप्त हुआ है वह जैसा चेतनयुक्त पूर्व में था वैसा नहीं हो सकता।

महर्षि दयानन्द के उपरोक्त विचारों का वेद में समर्थन प्राप्त होता है। जैसा कि चार्वाक मानते हैं कि शरीर के नष्ट होने के साथ ही जीव भी नष्ट हो जाता है। परन्तु वेद कहता है कि – **मर्तेष्वग्निरमृतो नि धायि।**[१२] अर्थात् मनुष्यों में अमर जीवात्मा विद्यमान है। जहाँ तक जीवात्मा के पाप-पुण्य भोगने की बात है, वहाँ भी चार्वाक का मत वेद विरुद्ध है। वेद के अनुसार – जीवात्मा भोक्ता रूप में सांसारिक विषयों का भोग करता है।[१३] चार्वाक चार महाभूतों को ही स्वीकार करता है। वह प्रत्यक्ष न होने से आकाश को स्वीकार नहीं करता है। उपनिषद् का वचन है-

सर्वेषां वा एष भूतानामाकाशः परायणम् सर्वाणि ह वा इमानि भूतान्याकाशादेव जायन्ते।[१४]

चैतन्यविशिष्टदेह ही आत्मा – चार्वाकों का सिद्धान्त है कि –

तच्चैतन्यविशिष्टदेह एव आत्मा देहातिरिक्त आत्मनि प्रमाणाभावात्।[१५]

अर्थात् चैतन्यविशिष्टदेह ही आत्मा है, देह से अतिरिक्त आत्मा के विषय में प्रमाण का अभाव होने से। इस शरीर में चारों भूतों के संयोग से जीवात्मा उत्पन्न होकर उन्हीं के वियोग के साथ ही नष्ट हो जाता है। क्योंकि मरने के बाद कोई जीव प्रत्यक्ष नहीं होता।

महर्षि दयानन्द इसके समाधान में कहते हैं कि जो देह से पृथक् आत्मा न हो तो जिसके संयोग से चेतनता और वियोग से जड़ता होती है, वह देह से पृथक् है। जैसे आँख सबको देखती है पर वह स्वयं को नहीं देख सकती। इसी प्रकार प्रत्यक्ष का करने वाला अपने ऐन्द्रिय का प्रत्यक्ष नहीं कर सकता। जैसे आँख से सब घट-पटादि पदार्थ देखता है वैसे आँख को अपने ज्ञान से देखता है। जो दृष्टा है वह दृष्टा ही रहता है, दृश्य कभी नहीं होता। कठोपनिषद् से इस तथ्य की पुष्टि होती है –

एष सर्वेषु भूतेषु गूढोऽऽत्मा न प्रकाशते।
दृश्यते त्वग्र्यया बुद्ध्या सूक्ष्मया सूक्ष्मदर्शिभिः।।[१६]

पुरुषार्थ का फल – चार्वाकों के अनुसार सुन्दर स्त्री से आलिङ्गन करना ही पुरुषार्थ का फल है।[१७]

यदि इसे पुरुषार्थ का फल मानते हैं तो इससे क्षणिक सुख और दुःख भी होता है, वह भी पुरुषार्थ का ही फल होगा। जब ऐसा है तो स्वर्ग ही की हानि होने से दुःख भोगना पड़ेगा। जो कहो कि सुख के बढ़ाने और दुःख के घटाने में प्रयत्न करना चाहिए तो मुक्ति सुख की हानि हो जाती है। इसलिए वह पुरुषार्थ का फल नहीं।[१८]

परलोक– चार्वाक परलोक की धारणा को व्यर्थ मानते हैं। क्योंकि इस लोक के उपस्थित सुख को छोड़कर अनुपस्थित स्वर्ग के सुख की इच्छा कर धूर्त कथित वेदोक्त अग्निहोत्रादि कर्म, उपासना और ज्ञानकाण्ड का अनुष्ठान परलोक के लिए करते हैं, वे अज्ञानी हैं। जो परलोक है ही नही, उसकी आशा करना मूर्खता का काम है । क्योंकि–

यदि गच्छेत्परं लोकं देहादेष विनिर्गतः।
कस्माद् भूयो न चायाति बन्धुस्नेहसमाकुलः।।[१९]

यदि इस देह से निकल कर जीव किसी अन्य लोक में जाता है तो वह अपने बन्धुओं के स्नेह के कारण पुनः अपने घर में ही क्यों नहीं आ जाता।

इस सन्दर्भ में चार्वाकों की वेद विरुद्धता पुनर्जन्म के निरुपण के समय ही स्पष्ट कर दी गयी है। महर्षि दयानन्द इस विषयमें कहते हैं कि देह से निकल कर जीव स्थानान्तर और शरीरान्तर को प्राप्त होता है और उसको पूर्वजन्म तथा कुटुम्बादि का ज्ञान कुछ भी नहीं रहता, इसलिए वह पुनः कुटुम्ब में नहीं आ सकता।[२०]

अग्निहोत्र, वेद, त्रिदण्ड, भस्मगुण्ठन - चार्वाकों के अनुसार-

अग्निहोत्रं त्रयो वेदास्त्रिदण्डं भस्मगुण्ठनम्।
बुद्धिपौरुषहीनानां जीविकेति बृहस्पतिः।।[२१]

अग्निहोत्र, वेद, त्रिदण्ड, भस्मगुण्ठन ये सभी बुद्धि एवं पौरुषहीन व्यक्तियों की आजीविका के साधन हैं।

त्रयो वेदस्य कर्त्तारो भाण्डधूर्तनिशाचराः।
जर्फरीतुर्फरीत्यादि पण्डितानां वचः स्मृतम्।।[२२]

अर्थात् तीनों वेदों के कर्ता भाण्ड, धूर्त और निशाचर हैं तथा जर्फरी-तुर्फरी इत्यादि पण्डितों के धूर्ततायुक्त वचन हैं।

अश्वस्यात्र हि शिश्नन्तु पत्नीग्राह्यं प्रकीर्तितम्।
भण्डैस्तद्वत्परं चैव ग्राह्यजातं प्रकीर्त्तितम्।।[२३]

तथा अश्व के शिश्न को यजमान की पत्नी ग्रहण करे।

मांसानां खादनं तद्वन्निशाचरसमीरितम्।।[२४]

मांसाहार प्रतिपादन करने वाला वेद राक्षसों का बनाया हुआ है।

महर्षि दयानन्द के अनुसार अग्निहोत्रादि यज्ञों से वायु, वृष्टि, जल की शुद्धि द्वारा आरोग्यता का होना, उससे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि होती है।[२५] उपनिषद् का वाक्य है कि स्वर्ग की कामना के लिए अग्निहोत्र करें -

अग्निहोत्रं जुहुयात्स्वर्गकामः।[२६] तथा -
यथेह क्षुधिता बाला मातरं पर्य्युपासते।
एवꣳसर्वाणि भूतान्यग्निहोत्रमुपासते।।[२७]

चार्वाकों द्वारा किया गया त्रिदण्ड तथा भस्मधारण का खण्डन ठीक है। क्योंकि सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय में स्तुति, प्रार्थना अथवा उपासना की पद्धति में कहीं भी त्रिदण्ड अथवा भस्मधारण क उल्लेख नहीं है। महर्षि दयानन्द कहते हैं कि जो चार्वाकादि ने वेदादि सत्यशास्त्र देखे, सुने वा पढ़े होते तो वेदों की निन्दा कभी न करते कि वेद भांड, धूर्त और निशाचरवत् पुरुषों ने बनाये हैं, ऐसा वचन कभी न निकालते हाँ। भांड धूर्त निशाचरवत् महीधरादि टीकाकार हुए हैं, उनकी धूर्त्तता है, वेदों की नहीं।[२८]

जहाँ तक वेदों के निर्माण का प्रश्न है महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के वेदोत्पत्ति विषय में शतपथ ब्राह्मण के याज्ञवल्क्य-मैत्रेयी संवाद को प्रस्तुत किया है -

एवं वा अरेऽस्य महतो भूतस्य निःश्वसितमेतद्यदृग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वाङ्गिरसः।[२९]

अर्थात् याज्ञवल्क्य कहते हैं कि हे मैत्रेयी! महान् आकाश से भी वृहद् परमेश्वर से ही ऋग्वेदादि वेद्चतुष्टय निःश्वास के समान सहज रूप से निकते हैं, ऐसा मानना चाहिए। जैसे शरीर से उच्छवास निकल कर पुनः शरीर में ही प्रवेश कर जाता है, वैसे ही ईश्वर से वेद का प्रादुर्भाव और तिरोभाव होता है, ऐसा मानन चाहिए।[३०]

भला! विचारना चाहिएकि स्त्री से अश्व के लिङ्ग का ग्रहण कराके उससे समागमकराना और यजमान की कन्या से हाँसी ठट्ठा आदि कना सिवाय वाममार्गी लोगों से अन्य मनुष्यों का काम नहीं है। बिना इन महापापी वाममार्गियों के भ्रष्ट, वेदर्थ से विपरीत, अशुद्ध व्याख्यान कौन करता? और जो माँ खाना है यह भी उन्हीं वाममार्गी टीकाकारों की लीला है. वेदों में कहीं माँस का खाना नहीं लिखा।[३१]

मोक्ष - चार्वाक के अनुसार देह का नाश होना ही मोक्ष है।[३२]

इस पर महर्षि दयानन्द कहते हैं कि- तो फिर गधे, कुत्ते आदि पशुओंऔर मनुष्यों में क्या अन्तर रहा।[३३] अर्थात् वैदिक और दार्शनिक ग्रन्थों में मोक्षप्राप्ति के यम-नियमादि मार्ग बतलाये ग्ये हैं, उनकी कोई प्रासङ्गिकता न रहेगी।

जगत् स्वाभाविक है - चार्वाकों के अनुसार अग्नि उष्ण है, जल शीत है, तथा वायु स्पर्श में सम है। ऐसा इनको किस्ने बनाया है? अर्थात् किसी ने भी नहीं। इसलिए

जगत् के समस्त पदार्थ स्वाभाविक हैं।

अग्निरुष्णो जलं शीतं समस्पर्शस्तथाऽनिलः।
केनेदं चित्रितं तस्मात्स्वभावात्तद्व्यवस्थितिः।।[३४]

महर्षि दयानन्द इसके समाधान में कहते हैं कि बिना चेतन परमेश्वर के निर्माण किये जड़ पदार्थ स्वयं आपस में स्वभाव से नियमपूर्वक मिलकर उत्पन्न नहीं हो सकते। इस वास्ते सृष्टि का कर्ता अवश्य होना चाहिए। यदि स्वभाव से ही होते तो द्वितीय सूर्य, चन्द्र, पृथिवी और नक्षत्रादि लोक आपसे आप क्यों नहीं बन जाते हैं।[३५] इस सन्दर्भ में वेद का कथन है कि वह ईश्वर सत् वस्तुओं का कारण तथा अमूर्त वायु आदि का प्रकाशक है।[३६]

वर्ण एवं आश्रम - चार्वाकों के अनुसार न कुछ स्वर्ग है, न अपवर्ग है तथा न ही यह आत्मा दूसरे लोक में जाता है तथा न ही वर्णाश्रम आदि की क्रियाएँ फल देने वाली हैं।

न स्वर्गो नाऽपवर्गो वा नैवात्मा पारलौकिकः।
नैव वर्णाश्रमादीनां क्रियाश्च फलदायिकाः।।[३७]

महर्षि दयानन्द कहते हैं कि स्वर्ग सुख भोग और नरक दुःख भोग का नाम है। जो जीवात्मा न होता तो सुख दुःख का भोक्ता कौन हो सके? जैसे इस समय सुख दुःख का भोक्ता जीव है वैसे परजन्म में भी होता है। क्या सत्यभाषण और परोपकारादि क्रिया भी वर्णाश्रमियों की निष्फल होगी? कभी नहीं।[३८]

सुख दुःख का भोक्ता जीव है, इस तथ्य की पुष्टि उपनिषद् इस प्रसिद्ध मन्त्र से हो जाती है -

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्यः **पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति।।**[३९]

यज्ञ में पशुबलि - चार्वाक कहते हैं कि ज्योतिष्टोम यज्ञ में मारा हुआ पशु यदि स्वर्ग में जायेगा, ऐसा मानकर यजमान यज्ञ में पशु की हिंसा करता है तो वह अपने पिता को मारकर स्वर्ग में क्यों नहीं भेज देता।

पशुश्चेन्निहतः स्वर्गं ज्योतिष्टोमे गमिष्यति।
स्वपिता यजमानेन तत्र कस्मान्न हिंस्यते।।[४०]

महर्षि दयानन्द इसके समाधान में कहते हैं कि पशु मार के होम करना वेदादि सत्यशास्त्रों में कहीं नहीं लिखा है।[४१]

श्राद्ध एवं तर्पण - चार्वाक कहते हैं कि यदि मृतक प्राणियों का श्राद्ध उन मरे हुए प्राणियों की तृप्ति का कारण है तो कहीं अन्य स्थान पर जाते हुए व्यक्तियों के लिए पाथेय अर्थात् मार्ग के लिए भोज्यादि सामग्री आदि की कल्पना व्यर्थ है। स्वर्ग में स्थित व्यक्ति जब दान से तृप्त हो जाते हैं तब प्रासाद के ऊपरि भाग में स्थित व्यक्ति को नीचे से भोजन क्यों नहीं पहुँचाया जा सकता है। अतः ब्राह्मणों के द्वारा अपनी जीविकोपार्जन के लिए ही मृतकों के लिए ये प्रेतक्रियाएँ बनायी गयी हैं।[४२]

इस पर महर्षि दयानन्द का मन्तव्य है कि मृतकों का श्राद्ध, तर्पण करना कपोलकल्पित है क्योंकि यह वेदादि सत्यशास्त्रों के विरुद्ध होने से भागवतादि पुराणवालों का मत है। इसलिए इस बात का खण्डन अखण्डनीय है।[४३]

नरक - चार्वाकों के अनुसार काँटे आदि के लगने से होने वाले दुःख का नाम नरक है।[४४] इस पर महर्षि दयानन्द कहते हैं कि तो महारोगादि नरक क्यों नहीं।[४५] अर्थात् लोक में और भी बड़े-बड़े दुःख दिखायी देते हैं। उन सबको नरक मानना चाहिए।

परमेश्वर - चार्वाकों की मान्यता है कि लोकसिद्ध राजा ही परमेश्वर है।[४६]

इस पर महर्षि दयानन्द कहते हैं कि राजा को ऐश्वर्यवान् और प्रजापालन में समर्थ होने से श्रेष्ठ माने तो ठीक है, परन्तु जो अन्यायकारी और पापी राजा हो तो उसको भी परमेश्वर के समान मानते हो तो तुम्हारे जैसा कोई भी मूर्ख नहीं।[४७]

अतः स्पष्ट है कि महर्षि दयानन्द द्वारा सत्यार्थप्रकाश के बारहवें समुल्लास में चार्वाक दर्शन के सम्पूर्ण सिद्धान्तों को स्पष्ट किया गया है तथा साथ ही प्रसिद्ध दार्शनिक गन्थ सर्वदर्शन संग्रह के उद्धरणों को प्रमाणस्वरूप प्रस्तुत किया गया है। महर्षि दयानन्द द्वारा चार्वाक दर्शन के सिद्धान्तों के सम्बन्ध में दोनों ही प्रकार के विचार प्राप्त होते हैं। वे चार्वाक दर्शन के कुछ मतों का समर्थन करते हैं तथा कुछ मतों का विरोध भी। परन्तु यहाँ समर्थन अथवा विरोध का एकमात्र कारण चार्वाकों के सिद्धान्तों की वेदानुकूलता है। चार्वाकों के जो मत वेदानुकूल हैं, महर्षि दयानन्द उनका समर्थन करते हैं तथा जो वेदानुकूल नहीं हैं, उनका विरोध।

चार्वाकों के त्रिदण्ड, भस्मगुण्ठन, यज्ञ में पशुबलि तथा श्राद्ध एवं तर्पण विषयक विचारों का महर्षि दयानन्द समर्थन नहीं करते हैं। वस्तुत: ये सभी मत वेदविरुद्ध हैं। त्रिदण्ड एवं भस्मगुण्ठन का विधान किसी भी वैदिक यज्ञ अथवा विधान में नहीं है तथा न ही इनकी दैनिक जीवन में कोई उपयोगिता दिखायी देती है। जहाँ तक यज्ञ में पशुबलि का प्रश्न है, इसका भी कहीं वेद में समर्थन नहीं मिलता। परन्तु कुछ वेद के भाष्यकार ऐसे भी हुए जिन्होंने वेदमन्त्रों से यज्ञ में पशुबलि को सिद्ध किया। अत: यह दोष उन तथाकथित वेदभाष्यकारों का है, न कि वेद का। यहीं स्थिति श्राद्ध एवं तर्पण के विषय में है। ये दोनों ही जीवित व्यक्तियों के सन्दर्भ में हैं। परन्तु कालान्तर में जनमानस पर पौराणिक प्रभाव के कारण कुछ कर्मकाण्डियों ने इन्हें अपनी जीविका का साधन बना लिया। चार्वाकों ने वेदों का अध्ययन तो किया नहीं, अपितु उन्होंने महीधरादि वेदभाष्यकारों तथा पौराणिकों द्वारा यज्ञादि के नाम से समाज में प्रचलित किये गये पाखण्ड को वेद से जोड़ दिया तथा वेद की निन्दा करने लगे।

इसके अतिरिक्त महर्षिदयानन्द ने चार्वाक दर्शन के पुनर्जन्म का सिद्धान्त, शरीर में चार महाभूतों के योग से चैतन्य-उत्पत्ति, चैतन्यविशिष्टदेह ही आत्मा, पुरुषार्थ का फल, परलोक, अग्निहोत्र, वेद, मोक्ष, जगत् स्वाभाविक है, वर्ण एवं आश्रम, नरक तथा परमेश्वर विषयक सिद्धान्तों का खण्डन किया है। खण्डन का सम्पूर्ण आधार वेद है, जैसा कि प्रस्तुत शोध-पत्र में प्रत्येक स्थल पर प्रदर्शित किया गया है। अन्त में महर्षि दयानन्द के ही शब्दों में- जो वाममार्गियों ने मिथ्या कपोलकल्पना करके वेदों के नाम से अपना प्रयोजन सिद्ध करना अर्थात् यथेष्ट मद्यपान, माँस खाने और परस्त्री गमन करने आदि दुष्ट कामों की प्रवृत्ति होने के अर्थ वेदों को कलङ्क लगाया, इन्हीं बातों को देखकर चार्वाक, बौद्ध तथा जैन लोग वेदों की निन्दा करने लगे और पृथक् एक वेदविरुद्ध अनीश्वरवादी अर्थात् नास्तिक मत चला लिया। जो चार्वाकादि वेदों का मूलार्थ विचारते तो झूठी टीकाओं को देखकर सत्य वेदोक्त मत से क्यों हाथ धो बैठते? क्या करे बिचारे '**विनाशकाले विपरीतबुद्धिः**'। जब नष्ट भ्रष्ट होने का समय आता है तब मनुष्य की उल्टी बुद्धि हो जाती है।[२८]

सन्दर्भ -

१. चार्वाकसमीक्षा, पृ. ६

२. सर्वदर्शनसंग्रह पृ. २, पंक्ति १७-१८

३. वही पृ. १४, पं. १२२-१२३

४. सत्यार्थ प्रकाश पृ. २९१ आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली -६,६५ वाँ संस्करण, नवम्बर २००७

५. असुं स ईयुरवृका ऋतज्ञाः। ऋग्वेद १०.१५.१

६ को नो मह्या अदितये पुनर्दात्। वही १.२४.१

७ पितरं च दृशेयं मातरं च। वही १.२४.१

८ कठोपनिषद् १.१.६

९ वही २.४.७

१० अत्र चत्वारि भूतानि भूमिवार्यनलानिलाः। सर्वदर्शनसंग्रह पृ. ७, पंक्ति ६०

११ तत्र पृथिव्यादीनि भूतानि चत्वारि तत्त्वानि। तेभ्य एव देहाकारपरिणतेभ्यः किण्वादिभ्यो मदशक्तिवच्चैतन्य-मुपजायते। तेषु विनष्टेषु सत्सु स्वयं विनश्यति।

वही पृ. २-३, पंक्ति २३-२५

१२ ऋग्वेद १०.४५.७

१३ अथर्ववेद १०.८.२१

१४ नृसिंहपूर्वतापिन्युपनिषद् ३.५

१५ सर्वदर्शनसंग्रह पृ.३, पं. २७-२८

१६ कठोपनिषद् ३.१२

१७ अङ्गनाद्यालिङ्गनादिजन्यं सुखमेव पुरुषार्थः। सर्वदर्शनसंग्रह पृ. ३, पं. २९-३०

१८ सत्यार्थप्रकाश, पृ. २८९

१९ सर्वदर्शनसंग्रह पृ. १४, पं. १२४-१२५

२० सत्यार्थप्रकाश, पृ.२९१

२१ सर्वदर्शनसंग्रह पृ. ५, पं. ५०-५१

२२ वही पृ. १४, पं. १२८-१२९

२३ वही पृ. १५, पं. १३०-१३१

२४ वही पृ. १५, पं. १३२

२५ सत्यार्थप्रकाश, पृ. २८९

२६ मैत्रायण्युपनिषद् ६.३६

२७ छान्दोग्योपनिषद् ५.२४.५

२८ सत्यार्थप्रकाश पृ. २८९

२९ श. का. १४, अ. ५ (ब्रा. ४, क. १०)

३० याज्ञवल्क्योऽभिवदति - हे मैत्रेयी! महत आकाशादपि बृहत: परमेश्वरस्यैव

सकाशादृग्वेदादिवेदचतुष्टयं (नि:श्वसित) नि:श्वासवत्सहजतया

नि:सृतमस्तीति वेद्यम्। यथा शरीराच्छ्वासो नि:सृत्य पुनस्तदेव प्रविशति तथैवेश्वराद्वेदानां प्रादुर्भावतिरोभावौ भवत: इति निश्चय:। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, वेदोत्पत्तिविषय ३

३१ सत्यार्थप्रकाश, पृ. २९१-२९२

३२ देहोच्छेदो मोक्ष:। सर्वदर्शनसंग्रह पृ.६,पं. ५३

३३ सत्यार्थप्रकाश, पृ. २८९

३४ सर्वदर्शनसंग्रह पृ. १३,पं. ११०-१११

३५ सत्यार्थप्रकाश, पृ. २९१

३६ सतश्च योनिमसतश्च वि व:। यजुर्वेद १३.३

३७ सर्वदर्शनसंग्रह पृ. १३, पं. ११४-११५

३८ सत्यार्थप्रकाश, पृ. २९१

३९ श्वेताश्वतरोपनिषद् ४.६

४० सर्वदर्शनसंग्रह पृ. १३, पं. ११४-११५

४१ सत्यार्थप्रकाश पृ. २९१

४२ मृतानामपि जन्तूनां श्राद्धं चेत्तृप्तिकारणम्।
गच्छतामिह जन्तूनां व्यर्थं पाथेयकल्पनम्।।
स्वर्गस्थिता यदा तृप्तिं गच्छेयुस्तत्र दानत:।
प्रासादस्योपरिस्थानामत्र कस्मान्न दीयते।।
ततश्च जीवनोपायो ब्राह्मणैर्विहितस्त्विह।
मृतानां प्रेतकार्याणि न त्वन्यद्विद्यते क्वचित्।।
सर्वदर्शनसंग्रह पृ. १३-१४, पं. ११६, ११८, १२०, १२१, १२६, १२७

४३ सत्यार्थप्रकाश, पृ. २९१

४४ कण्टकादिजन्यं दु:खमेव नरक:। सर्वदर्शनसंग्रह पृ. ६, पं. ५२

४५ सत्यार्थप्रकाश, पृ. २८९

४६ लोकसिद्धो राजा परमेश्वर:। वही पृ. ६, पं. ५२-५३

४७ सत्यार्थप्रकाश, पृ. २८९

४८ वही, पृ. २९२

सन्दर्भ ग्रन्थ -

१ अथर्ववेद, भाष्यकार - क्षेमकरणदास त्रिवेदी, आर्य प्रकाशन, दिल्ली, २००७

२ उपनिषद् संग्रह - सं. - पं. जगदीश शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, १९८०

३ ऋग्वेद, भाष्यकार - महर्षि दयानन्द सरस्वती, आर्य प्रकाशन, दिल्ली, २००५

४ ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका - महर्षि दयानन्द सरस्वती, दिल्ली

५ चार्वाकसमीक्षा - स्वामी कृष्णानन्द सरस्वती, विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान, होशियारपुर, १९६४

६ सत्यार्थप्रकाश - महर्षि दयानन्द सरस्वती, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली, ६५ वाँ संस्करण, नवम्बर २००७

७ सर्वदर्शनसंग्रह - सायण-माधव, प्राच्य विद्या संशोधन मन्दिर, पुना, १९२४

८ यजुर्वेद, भाष्यकार - महर्षि दयानन्द सरस्वती, आर्य प्रकाशन, दिल्ली, २००६

- सहायक आचार्य, पंजाब विश्वविद्यालय, विश्वेश्वरानन्द विश्वबन्धु संस्कृत एवं भारत-भारती अनुशीलन संस्थान, होशियारपुर

मनुष्यों को उचित है कि परमेश्वर में ही मन बुद्धि को युक्त कर विद्वानों के सङ्ग से विद्या को पा सुखी हो अन्य मनुष्यों को भी इसी प्रकार आनन्दित करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.१४

ईश्वर का आश्रय न करके कोई भी मनुष्य प्रजा की रक्षा नहीं कर सकता। जैसे ईश्वर सनातन न्याय का आश्रय करके सब जीवों को सुख देता है वैसे ही राजा को भी चाहिये कि प्रजा को अपनी न्याय व्यवस्था से सुख देवे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.३९

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ– प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***– आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***– अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***– गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***– वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***– इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***– योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(१६ से ३० सितम्बर २०१५ तक)

१. श्रीमती तारावन्ती कोहली, दिल्ली २. श्री रंजन हाण्डा, दिल्ली ३. सुश्री यशोदा रानी सक्सेना, कोटा, राज. ४. स्वस्तिकाम: चैरिटेबल ट्रस्ट, अमरावती, महा. ५. मन्त्री, आर्यसमाज कॉलोनी, गुड़गाँव, हरि. ६. श्री अजीत सिंह, दिल्ली ७. श्रीमती कमला देवी पंचौली, अजमेर ८. श्री गौरव मिश्रा, अजमेर ९. श्री शशिराम यादव, जयपुर, राज. १०. श्रीमती विमला रानी, मेरठ, उ.प्र. ११. श्री रमनलाल गोकुलदास आर्य, बुरहानपुर, म.प्र.। **- परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में नि:शुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चेक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१६ से ३० सितम्बर २०१५ तक)

१. श्रीमती तारावन्ती कोहली, दिल्ली २. श्रीमती विमला गुलाटी, दिल्ली ३. श्री पंकज गर्ग, कोलकाता ४. श्री ऋषभ गुप्ता, अम्बाला केन्ट, पंजाब ५. श्रीमती प्रेमवती शर्मा, जयपुर ६. कैप्टन चन्द्रप्रकाश त्यागी, हरिद्वार, उ.ख. ७. मन्त्री आर्यसमाज मॉडल टाउन, गुड़गाँव, हरि. ८. श्री भोलाराम मौर्य, अजमेर ९. श्री विरेन्द्र मित्तल, जगधारी, हरि. १०. श्री छोटूरामसिंह राठौड़, जयपुर, राज. ११. श्री राजेन्द्रसिंह आर्य, हिसार, हरि. १२. श्री नाथूलाल काकाणी, अजमेर १३. श्रीमती सीमा खत्रा, अजमेर १४. श्रीमती कमला देवी पंचौली, अजमेर १५. श्री मोहन सिन्धी राजपुरोहित, पीपाड़ सिटी, राज. १६. श्री उम्मेदसिंह, जोधपुर, राज. १७. श्री प्रेमसिंह, बाड़मेर, अजमेर १८. श्री अर्जुनसिंह, सोजतसिटी, राज. १९. श्री रामसिंह, पीपाड़सिटी, राज. २०. श्री कल्याणसिंह, पीपाड़सिटी, राज. २१. श्री गोविन्दसिंह रामपुरिया २२. श्री पीरसिंह, पीपाड़सिटी, राज. २३. श्री भँवरसिंह, पीपाड़सिटी, राज. २४. श्री शंकरसिंह, सोजतसिटी, राज. २५. श्री केसरसिंह राजपुरोहित, पीपाड़सिटी, राज. २६. श्री रामसिंह राजपुरोहित, पीपाड़सिटी, राज. २७. श्री सुमेरसिंह राजपुरोहित, पीपाड़सिटी, राज. २८. श्री जुगराजसिंह राजपुरोहित, पाली, राज. २९. श्री हरनारायण नवाल, पीपाड़सिटी, राज. ३०. श्री चिरंजीवी वेदान्त, अजमेर ३१. श्री मछीकेला शास्त्री, लातूर, महा. ३२. श्री राजेन्द्र कुमार आर्य, कोटा, राज. ३३. श्रीमती मेवा देवी, गुड़गाँव, हरि. ३४. श्री सी.एल. भण्डारी, ठाणे, महा. ३५. श्री पदमसिंह, पीपाड़सिटी, राज.।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

विवाह करके स्त्री-पुरुषों को चाहिये कि जिस-जिस काम से विद्या, अच्छी शिक्षा, बुद्धि, धन, सुहृद्भाव और परोपकार बढ़े उस कर्म का सेवन अवश्य किया करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४

जिसके माता और पिता विद्वान् न हों, उनके सन्तान भी उत्तम नहीं हो सकते।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.९

मनुष्यों को चाहिये कि पुरुषार्थ से विद्या का सम्पादन, विधिपूर्वक अन्न और जल का सेवन, शरीरों को नीरोग और मन को धर्म में निवेश करके सदा सुख की उन्नति करें। **-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.१४**

श्री गजानन्द जी आर्य का ८५ वां जन्मदिन

श्री गजानन्द जी आर्य का ८५वाँ जन्मदिन दिनांक २९ अगस्त २०१५, रक्षाबंधन के दिन उनके परिवार ने बहुत धूमधाम से मनाया। इस अवसर पर उनकी चारों बहनें - सुनीता गुप्ता-चरखी दादरी से, श्रीमती सुशीला गुप्ता व उनके पति श्री शत्रुघ्नलाल गुप्त- रांची से, स्नेहलता अग्रवाल- दिल्ली से तथा श्रीमती शकु गोयल व उनके पति श्री विजय गोयल- श्रीगंगानगर से कलकत्ता पहुँचे। उनके भाई श्री सत्यानन्द आर्य तथा उनके तीनों बच्चे सविता, महेन्द्र और नरेन्द्र भी सपरिवार पहुँचे। दो दिनों का यज्ञ का कार्य हुआ। आचार्य वागीश ने जन्मदिन के महत्व पर चर्चा की। कलकत्ता के स्थानीय आर्य समाजों के अधिकारीगण भी इस अवसर पर अपनी शुभकामनाएँ देने को आये थे।

परिवार जनों और मित्रों ने अपने हृदय की बातें आर्य जी के विषय में कही। परोपकारिणी सभा द्वारा निर्मित अभिनन्दन ग्रन्थ जो २०१० में संकलित किया गया था, उसका भी उसके नए कलेवर में विमोचन किया गया। विमोचन रांची से पधारे सभा के उपप्रधान श्री शत्रुघ्नलाल गुप्त और श्री दीनदयाल गुप्त जी के कर कमलों द्वारा संपन्न किया गया। इस अवसर पर उनके परिवार, इष्ट मित्रों और सामाजिक सम्मानित व्यक्तियों द्वारा उनका एक विशेष प्रकार के अभिनन्दन पत्र द्वारा सम्मान किया गया। इस अभिनन्दन पत्र की विशेषताएँ थी कि आर्य जी के जीवन से जुड़े समस्त लोगों- स्वामी दयानन्द सरस्वती, उनके स्वर्गस्थ माता-पिता से लेकर सभी परिवार और समाज जनों की तरफ से मंतव्य था। इस अभिनन्दन पत्र का नाम दिया गया था- **सम्पूर्ण अभिनन्दन पत्र।**

श्री गजानन्द आर्य ने अपने संक्षिप्त भाषण में अपने जीवन की एक बात बताई। उन्होंने कहा की वे हमेशा एक डायरी रखते थे, कोई भी अच्छी बात सुनते या पढ़ते थे तो उसमें लिख लेते थे, बाद में मनन कर के अपने जीवन में लाने की कोशिश करते थे। एक बार उन्होंने कहीं पढ़ा कि अपने जीवन के प्रत्येक दिन को इस प्रकार बिताओ, मानो की ये तुम्हारे जीवन का अंतिम दिन है। इसका अर्थ उन्होंने ये निकाला की हर व्यक्ति से प्रेम और सरलता से मिलो और बर्ताव करो, क्योंकि पता नहीं जीवन में फिर उस व्यक्ति से मिलने का अवसर मिले या नहीं। इस बात को अपने व्यवहार में लाने का लाभ ये हुआ कि वाणी में कभी कटुता नहीं रही। हर व्यक्ति को समुचित आदर और सम्मान दिया। शायद इसी कारण उन्हें भी सबसे हमेशा सम्मान और प्रेम मिलता रहा है। सभी उपस्थित महानुभावों ने उनके शतवर्ष के स्वस्थ जीवन की शुभकामना की।

आर्य जी की धर्मपत्नी श्रीमती तारामणी देवी आर्या ने सभी अतिथियों का स्वागत भोजन की व्यवस्था से किया। दो दिनों का ये पारिवारिक सम्मेलन बहुत ही प्रसन्नता के वातावरण में सम्पन्न हुआ।

सद्धर्म प्रचार न रुके कभी
वाणी, सुलेखिनी हो न बन्द।
करिये प्रिय आर्यसमाजोन्नत
सब भाँति, न हो उत्साह मन्द।।
मानवता का होवे विकास
सब कटे दनुजता, कुमति-फन्द।
सानन्द स्वस्थ परिवार सहित
शत वर्ष जिओ प्रिय गजानन्द।।

- प्रकाशचन्द, कविरत्न, अजमेर

श्री गजानन्द आर्य के ८५वें जन्मदिन पर उनका सम्पूर्ण अभिनन्दन।

दिनांक अगस्त २९, २०१५

स्थान - कोलकाता

हे शिष्य!

मैंने जिस कल्पना के व्यक्ति को आर्य मानकर अपने सपनों के आर्य समाज का निर्माण किया, तुम उस कल्पना के आर्य का एक सजीव रूप हो! मेरे सभी सिद्धान्तों और नियमों को तुमने अक्षरश: अपने जीवन में उतारा है। तुम्हारा स्वाध्याय, ईश्वर भक्ति और स्वच्छ जीवन समाज के लिए अनुकरणीय रहा है। वेदों और मेरे ग्रन्थों का न केवल तुमने आजीवन पठन किया है, बल्कि अपनी ओजस्वी लेखनी से उनकी व्याख्या, प्रचार और प्रसार किया है। मेरी तरह तुम्हारे अंदर भी समाज की कुरीतियों से लड़ने की तड़प रही है। तुमने सभी कुरीतियों से संघर्ष किया है।

श्रीमती परोपकारिणी सभा के निर्माण के समय भविष्य का जो स्वप्न मेरे मस्तिष्क में था, तुमने अपने नेतृत्व से उन सपनों को साकार किया है। जीवन के एक बहुत लम्बे समय को मेरी प्रिय सभा को दे कर, तुमने इस सभा रूपी वृक्ष की जड़ों में ऐसी खाद और पानी दिया है कि भविष्य में ये पेड़ हमेशा निरंतर बढ़ेगा। परोपकारिणी सभा के संचालन में तुमने निर्णय ले कर इस सभा को अन्य संस्थाओं की तरह राजनीति का मैदान नहीं बनने दिया।

वत्स! तुम अपने भाषणों में हमेशा ऋषि ऋण की चर्चा करते रहे हो। मैं स्वामी दयानन्द सरस्वती, आज तुम्हारे जीवन के इस विशेष अवसर पर तुम्हें- मेरे यानि ऋषि ऋण से उऋण करता हूँ। मैं ये कामना करता हूँ कि तुम इसी तरह अपने अच्छे स्वास्थ्य के साथ पूर्ण आयु को प्राप्त करते हुए मोक्ष की दिशा में अग्रसर होवो। ओम स्वस्ति!

प्रिय आत्मज!

देखा गया है कि लोग अपने आप को सौभाग्यशाली मानते हैं कि वे अमुक माता-पिता के हैं। पुत्र! हम लालमन और लक्ष्मी देवी तुम्हारे पिता और माता अपने आप को सौभाग्यशाली मानते हैं कि हमें तुम्हारे जैसा पुत्र मिला। तुम्हारे जन्म से लेकर हमारी जीवन क्षण तक तुमने हमें सुख दिया है। विद्यार्थी जीवन से लेकर गृहस्थ जीवन तक तुमने ही मनसा वाचा कर्मणा सेवा की है। हमारी हर इच्छा को तुमने शिरोधार्य किया है। जिस समाज की डोर को हमने अपने जीवन काल में पकड़ा था, तुमने उस डोर को पूरे परिवार के लिए मजबूत रस्सी के रूप में बना दिया।

और तुम्हारा विवाह! तुम्हारे विवाह की चर्चा करते हुए तो हमारा मस्तक गर्व से तन जाता है, सचमुच तुमने स्तब्ध कर दिया था हमें अपने आदर्श विवाह के निर्णय से! तुम्हारे निर्णय से हमारे जीवन के स्त्री उद्धार अभियान को एक बहुत बड़ा बल मिला। मेरे आह्वान की ताकत सौ गुनी हो गयी। तुम्हारी सामाजिक और साहित्यिक उपलब्धियों ने हमारा सम्मान पूरे समाज में बढ़ाया है।

तुमने मात्र हमारी और अपनी दादी माँ की ही सेवा नहीं की, बल्कि अपने सभी छोटे भाइयों और बहनों के लिए उनका आदर्श बन कर मार्गदर्शन किया। तुम्हारे अन्दर वे अपने पिता देखते रहे। हमारी मृत्यु के बाद तो तुम्हीं उनके लिए पिता बन चुके हो। ईश्वर से प्रार्थना है कि तुम्हें शतायु और उत्तम स्वास्थ्य दे। हम दोनों तुम्हे पितृ ऋण से उऋण करते हैं।

हे पिता व भ्राता श्री!

हमारे माता-पिता ने सबसे पहले आपको हम सबके अग्रज के रूप में जन्म देकर हम सब पर एक बहुत बड़ा उपकार किया। आपका स्वरूप हमारे लिए माता और पिता का ही प्रतिबिम्ब रहा है। आपके जीवन से हमने संस्कारों की दृढ़ता, विचारों की स्वच्छता और जीवन की सादगी के महत्व को सीखा है। एक अनुशासित लेकिन कर्मठ जीवन की परिभाषा हमें आपसे सीखने को मिली। कहीं न कहीं हमने आपके गुणों को आंशिक रूप से अपने जीवन में उतारने का प्रयत्न किया है। जीवन के हर कठिन समय में आप और भाभी जी हमारा सम्बल बने हो। आपकी सलाह ही हमारे लिए सहारा होती है। जाने-अनजाने हमने कभी कोई धृष्टता भी की होगी, पर आपने हमें कभी किसी खिन्नता का आभास नहीं दिया। परिवारों में व्यापार और सम्पत्ति आदि को लेकर, विशेषकर भाइयों के बीच विवाद हो जाते हैं, लेकिन आपने अपने जीवन की आवश्यकताओं को इतना सीमित रखा कि किसी प्रकार का प्रलोभन आप तक पहुँच ही नहीं सका।

हम तो आपके भाई और बहन हैं, लेकिन हम सब

के जीवन साथी भी आपसे भावनात्मक रूप से जुड़ते चले गए। आप सभी की भावनाओं में आदरणीय और पूज्य हैं। हम सब एक स्वर में आपकी दीर्घायु और अच्छे स्वास्थ्य की कामना करते हैं।

हे देवत्व स्वरूप पति!

मैंने अपने पिछले जीवन में अवश्य ही बहुत अच्छे कर्म किये होगें, जो कि आप मुझे नैया को तूफानों के बीच में एक पतवार की तरह मिले और बन गए इस नैया के माँझी कि ये नाव आपके साथ और आपके सहारे निरंतर एक सुखद यात्रा के रूप में चली। ऐसा नहीं है कि हम दोनों की इस यात्रा में रुकावटें या तूफान नहीं आये लेकिन आपके साथ इनका मुकाबला करना भी एक सुखद अनुभव रहा। मैं एक पौराणिक परिवार में पली-बढ़ी लड़की, धीरे-धीरे आपके साथ आर्य समाज के रंग में रंग गयी। इतने बड़े परिवार में आकर आपके व्यवहार के कारण मैं भी सबके स्नेह और सम्मान की पात्र बन गयी। मेरे तीनों बच्चे आपकी छत्र-छाया में अच्छे संस्कारों से युक्त हो सके। परिवार निरंतर बढ़ता गया और आपकी छाया में संस्कारित होता रहा। मैं अपने जीवन में जिस शान्ति का अनुभव करती हूँ, उसके कारण दोनों को शारीरिक कष्ट के उपरांत भी हम दोनों इस वृद्धावस्था में एक आश्रम की सी दिनचर्या बिता पाते हैं। ईश्वर से प्रार्थना है जितना भी जीवन हम दोनों को मिला है, वो साथ-साथ मिले हम एक-दूसरे के सहारे अपना जीवन सुख से बिता पाएँ। इस अवसर पर आप सबको अपना आशीर्वाद देंगे, मुझे भी आपका आशीर्वाद मिले, जिससे अगला जन्म भी यूँ ही आपके चरणों में अर्पित कर सकूँ। आपको मेरा नमन!

हे प्रात:स्मरणीय पिता!

पिता वो होता है जो अपने बच्चों को जन्म देता है, पालन-पोषण, शिक्षा-दीक्षा और अपने पैर पर खड़ा होने का सम्बल देता है। पिता वो भी होता है, जो अपने बच्चों की रक्षा करता है लेकिन वो व्यक्ति जो अपने बच्चों को जीवन की बुराइयों से बचने के लिए संस्कार देता है, अच्छाई और बुराई में अंतर करने की समझ देता है और दूसरों के प्रति अपनी जिम्मेदारी की नीति देता है- वो ईश्वर का ही रूप होता है। हम बहुत ही भाग्यवान हैं कि हमें ऐसे पिता और माता मिले। बचपन में अंगुली पकड़कर चलना सिखाने से लेकर वर्तमान प्रौढ़ावस्था तक दर्शन देने वाले आप हमारे जीवन का आधार हैं। आपके साथ बिताये हुए हमारे पल हमारी अमिट स्मृतियाँ हैं। हम ही नहीं आपके दामाद और दोनों पुत्रवधुएँ भी आपके रंग में रंग चुके हैं। इतना सब कुछ देने के बदले आपकी हम सबसे कोई अपेक्षाएँ, सांसारिक सुख साधनों का आपके जीवन में कोई महत्व नहीं हैं। हम चाहें तो भी आपके लिए कोई वस्तु उपहार-स्वरूप ढूंढ नहीं सकते, इसलिए हमारी ये भावनाएँ ही समर्पित हैं, आप अस्वीकार नहीं कर सकते। ईश्वर आप दोनों का हाथ हमारे सर पर यूँ ही बनाये रखे! आपके चरणों में हम सबका प्रणाम!

हे स्नेही पितामह!

आपने हम सब के जन्मदिन पर हमारे लिए हवन किया, आशीर्वाद दिया और उपहार दिए, हम आपके जन्मदिन पर क्या करें? हवन आप रोज करते हैं, आशीर्वाद आप हमको देते हैं, उपहार की तो क्या बताएं, आपको किसी चीज की आवश्यकयता ही नहीं है। आज भी लाभ हमारा ही हो रहा है। आज फिर हमें आपका प्यार और आशीर्वाद मिल रहा है। हम बस एक चीज आपको देते हैं- हमारा वचन! हम सभी- आपके पौत्र, पौत्रियाँ, दौहित्र, दौहित्रियाँ आपको वचन देते हैं कि हम हमेशा आपके बताये हुए मार्ग पर चलने का प्रयास करेंगे, एक आम जीवन के स्तर से ऊपर उठने की कोशिश करेंगे। आप जब भी हमें याद करेंगे, सबकुछ छोड़कर आपके पास पहुँच जाएंगे। ईश्वर से हम प्रार्थना करते हैं कि दुनिया को आप दोनों जैसे दादा-दादी और नाना-नानी मिलें! हैप्पी बर्थ डे दादाजी! हैप्पी बर्थ डे नानाजी!

हे आर्य श्रेष्ठ!

हम आर्यसमाज और आर्य परिवार से जुड़े सामाजिक लोग आज आपके जन्मदिन पर आपका हृदय से अभिनन्दन करते हैं। आर्य समाज, बड़ा बाजार और श्रीमती परोपकारिणी सभा आपके नेतृत्व को एक मानदण्ड की तरह मानती है। इतनी लम्बी सेवा के उपरान्त बिना किसी पद सम्मान की लालसा के आपने हमेशा अपने कर्तव्य को ही ऊपर रखा। आपके व्यापारिक संस्था भारत टेक्सटाइल और उसके बाद खुलने वाले सभी संस्थानों से जुड़े हम हजारों लोगों में आपकी एक अलग छवि बन रही है, जो आजीवन हमारे सम्मान की पात्र है। आपके गाँव शेरडा के लोग हमेशा आपके ग्राम सेवा के कार्यों को याद रखते हैं। देश के सभी आर्ष गुरुकुल और संस्थान जो आपसे किसी न किसी रूप में जुड़े हैं- आपकी शतायु और स्वास्थ्य के लिए कामना करते हैं।

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग तीन वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ नि:शुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम- **भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या- **10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम- **आई.डी.बी.आइ**, पावर हाऊस के सामने,

जयपुर रोड़, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या- **091104000057530**

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था-भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद-प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था-भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकोन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

जिज्ञासा समाधान - ९७

- आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा- सत्यार्थप्रकाश के अष्टम समुल्लास में वर्णित मनुष्य जाति की आदि सृष्टि त्रिविष्टप अर्थात तिब्बत में हुई, जिसमें श्रेष्ठ विद्वान् लोग आर्य और मूर्ख अनार्य (अनाड़ी) कहलाये। आर्य और अनार्य में सदा लड़ाई बखेड़ा होने के कारण आर्य लोग सर्व भूगोल में उत्तम इस भूखण्ड को जानकर सृष्टि की आदि के कुछ काल पश्चात् तिब्बत से सीधे इस देश में बस गये, जिसका नाम आर्यावर्त हुआ। इससे पूर्व इस देश का कोई भी नाम नहीं था और न कोई आर्यों से पूर्व इस देश में बसते थे। अत: आर्य जाति का उद्‌गम व आदि उत्पत्ति-स्थल तिब्बत है और सम्भवत: वही हमारे चारों वेद का ईश्वरीय ज्ञान ऋषियों को प्राप्त हुआ।

कृपया उक्त तथ्यों के प्रमाण से अवगत कराने का कष्ट करें। आज दिन भी तिब्बत में हमारे तीर्थ-स्थल कैलाश, मानसरोवर स्थित हैं। जहाँ प्रतिवर्ष हजारों भारतवासी तीर्थ यात्रा व दर्शन हेतु जाते हैं। इस तरह सारा तिब्बत हमारा आदि जन्म स्थल है। अत: सारा तिब्बत हमारा (भारत का) है। चीन उस पर जबरन काबिज है।

समाधान- महर्षि दयानन्द ने मानवोत्पत्ति तिब्बत पर कही है। महर्षि प्रश्न पूर्वक लिखते हैं- ''मनुष्यों की आदि सृष्टि किस स्थल में हुई?

उत्तर - त्रिविष्टप अर्थात् जिसको तिब्बत कहते हैं।'' आपने महर्षि के इस स्थल को लेकर प्रश्न पूछा है कि इसका आधार है या नहीं। इस विषय में जैसी जानकारी मुझे 'सत्यार्थ भास्कर' से प्राप्त हुई है, वैसा यहाँ लिखता हूँ।

जैसा बिना बीज के, निर्जीव रेत में जड़ और अंकुर नहीं फूटते। बीज भी अपने आप ही आप नहीं निकलता, किन्तु खोज करके लाया जाता है और अनुकूल स्थान पर बोया जाता है, जहाँ जलवायु पौधे के अनुकुल होता है, उसका खाद्य पर्याप्त मात्रा में मिलता है और आंधी-ओले से उसे सुरक्षित रखा जा सकता है। माली पहले एक क्यारी में पौध तैयार करता है फिर वहाँ से पौधे ले-लेकर यथास्थान सारी फुलवारी में रोपता है और आवश्यकतानुसार बाहर भी भेजता है। तात्पर्य यह है कि बीज सर्वत्र पैदा नहीं होता, एक ही स्थान से अन्यत्र फैलता है। इसी बीज क्षेत्र न्याय के अनुसार मनुष्य भी किसी एक ही स्थान पर पैदा हुआ और फिर संसार भर में फैल गया। प्रारम्भ में मनुष्य भी किसी एक ही स्थान पर पैदा हुआ और फिर संसार भर में फैल गया। प्रारम्भ में मनुष्य भी ऐसे स्थान पर हुआ होगा, जहाँ का जलवायु उसके अनुकूल हो, खाद्य सामग्री सुलभ हो और जहाँ वह अधिक से अधिक सुरक्षित रह सके। मनुष्य ही नहीं, पशु, पक्षी, वनस्पति आदि के लिए भी ऐसा ही स्थान उपयुक्त होगा। आदि सृष्टि के लिए उपयुक्त स्थान की योग्यता -

१. जो सबसे ऊँचा स्थान हो, २. जहाँ सर्दी-गर्मी जुड़ती हो, ३. जहाँ मनुष्य के खाद्य फल वनस्पति आदि प्रचुरता से उपलब्ध हों, ४. जिसके आसपास सब रंग-रूपों के विकास के लिए उपयुक्त वातावरण हो, ५. जिसका नाम सबके स्मरण का विषय हो।

अब इन पाँचों बिन्दुओं को विस्तार से देखते हैं-

१. हिमालय निर्विवाद रूप से सबसे ऊँचा स्थान है। कहते हैं कि पहले सम्पूर्ण पृथिवी जलमग्न थी। उस जल से सबसे पहले वही भूमि निकली उसी में वनस्पति उत्पन्न हुई और उसी पर सबसे पहले मनुष्यादि प्राणियों की सृष्टि हुई।

२.संसार में ऋतुएँ चाहे कितनी कही जाएँ, किन्तु सर्दी और गर्मी दो उनमें मुख्य हैं। यही कारण है कि समस्त भूमण्डल में सर्द और गर्म दो ही प्रकार के देश पाये जाते हैं। कुछ प्रदेश दोनों के मिश्रण से बने पाये जाते हैं, तो भी दोनों में से एक की प्रधानता रहती है। कश्मीर, नेपाल, भूटान और तिब्बत आदि प्रदेश बसे हुए हैं, इनके निवासी उसी सर्दी-गर्मी का अनुभव करते हैं। इसलिए मानव-सृष्टि के लिए हिमालय ही सर्वाधिक उपयुक्त स्थान ठहरता है। वैज्ञानिकों के अनुसार मनुष्य के आदि युग में मानसरोवर के आसपास का क्षेत्र शीतोष्ण जलवायु युक्त था। भारतीय प्राचीन साहित्य में भी इसका उल्लेख मिलता है।

३. मनुष्य का सर्वाधिक खाद्य दूध और फल है- **पयः पशूनां रसमोषधीनाम्।** दूध पशुओं से और फल

वृक्षों से मिलते हैं। जब मनुष्य दूध और फल के बिना और पशु वनस्पति के बिना नहीं रह सकते तो मनुष्य ऐसे देश में उत्पन्न नहीं हो सकता, जहाँ ये पदार्थ उपलब्ध न हों। हिमालय ऐसा स्थान है, जहाँ मनुष्य के लिए अपेक्षित समस्त पदार्थ सहज उपलब्ध है।

४. मूल स्थान के आसपास ऐसी विस्तृत भूमि होनी चाहिए, जहाँ सब रंग-रूपों के विकास की स्थिति हो और जहाँ रहकर मनुष्य संसार भर में रहने की योग्यता प्राप्त करके पृथिवी में सर्वत्र फैल सके। हिमालय से लगता भारत ऐसा देश है, जहाँ सब छहों ऋतुएँ वर्तमान रहती हैं। इस सर्वगुण सम्पन्न देश में सब रंग रूप के आदमी निवास करते हैं। ऐसे देश के सामीप्य के कारण भी यही प्रतीत होता है कि हिमालय (तिब्बत) पर ही मनुष्य की आदि सृष्टि हुई।

५. सभी देशों में बसने वालों को किसी न किसी रूप में हिमालय की स्मृति बनी हुई है। भारतीय आर्यों को हिमालय से और ईरानी आर्यों को भारत से आने की स्मृति आज भी बनी हुई है। चरक संहिता के प्रमाण से सिद्ध है कि आर्य लोग हिमालय (तिब्बत) से ही भारत आये थे और बीमार होकर एक बार फिर अपने स्थान हिमालय को लौट गये थे। इतना ही नहीं, कुछ समय बाद उनके फिर लौटकर भारत में बसने का उल्लेख मिलता है। चरक संहिता में लिखा है-

ऋषयः खलु कदाचिच्छालीना यायावराश्च ग्राम्यौषध्याहाराः सन्तः साम्पन्निका मन्दचेष्टाश्च नातिकल्याश्च प्रायेण बभूवुः। ते सर्वा समिति कर्त्तव्यतानामसमर्थाः सन्तो ग्राम्यवासकृतमात्मदोषं मत्वा पूर्वनिवासमपगतग्राम्यदोषं शिवं पुण्यमुदारं मेध्यगम्यसुकृतिभिर्गङ्गाप्रभवममरगन्धर्व-किन्नरानुचरितमनेक रत्ननिचयमचिन्त्याद्भुतप्रभवं ब्रह्मर्षिसिद्धचरणानुचरितं दिव्यतीर्थौषधिप्रभवमतिशरव्यं..... महर्षयः।। चिकित्सा स्थान. ४/३

इन चरक वचनों से मानव हिमालय पर था, बाद में मैदानी क्षेत्र में बस गया, यह वर्णन है। इनसे सिद्ध हो रहा है कि मानवोत्पत्ति सृष्टि के आरम्भ में हिमालय पर ही हुई।

हिमालय पर प्राणियों के शरीरांश बहुतायत से पाये जाते हैं। पृथिवी पर ऐसा कोई स्थान नहीं है जो हिमालय स्थित प्राणियों के शेषांगों से अधिक पुराने चिह्न दे सके। इससे भी प्रमाणित होता है कि हिमालय पर मनुष्य से पहले उत्पन्न होने वाले और उनके जीवनाधार वृक्ष और गौ आदि पशु पूर्वातिपूर्व काल में उत्पन्न हो गये थे, अतएव हिमालय आदि सृष्टि उत्पन्न करने की पूर्ण योग्यता रखता है। (हिमालय पर)

प्रारम्भ में आर्य हिमालय तिब्बत में ही उनका मूल उत्पत्ति स्थान तिब्बत रहा, बाद में निचले मैदानी क्षेत्र आर्यावर्त में आकर बस गये। आर्यावर्त की सीमा महर्षि मनु ने लिखी है-

आ समुद्रात्तु वै पूर्वादासमुद्रात्तु पश्चिमात्।
तयोरेवान्तरं गिर्योरार्यावर्तं विदुर्बुधाः।। मनु. २.२२

अर्थात्- पूर्व समुद्र से लेकर पश्चिम समुद्र पर्यन्त विद्यमान उत्तर में हिमालय और दक्षिण में स्थित विन्ध्याचल का मध्यवर्ती देश है, उसे विद्वान् लोग आर्यावर्त कहते हैं। इसी मनु के श्लोक के आधार पर महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के आठवें समुल्लास में आर्यावर्त देश की सीमा निर्धारण की है- ''हिमालय की मध्य रेखा से दक्षिण और पहाड़ों के भीतर रामेश्वर पर्यन्त विन्ध्याचल के भीतर जितने प्रदेश हैं, उन सबको आर्यावर्त इसलिए कहते हैं कि यह आर्यावर्त देश देवों और विद्वानों ने बसाया और आर्यजनों के निवास करने से आर्यावर्त कहलाया।'' आर्यावर्त की सीमा में हिमालय भी है और तिब्बत हिमालय पर है, इस आधार पर आप कह सकते हैं कि तिब्बत हम आर्यों का स्थान है। इस लेख में चरकादि का प्रमाण दिया है। ये प्रमाण आर्यों का मूल स्थान हिमालय को सिद्ध करते हैं। महर्षि का तो प्रत्यक्ष वचन है ही। यह तो निश्चित है कि तिब्बत पर चीन ने बलात् अधिकार जमा रखा है। जबकि अधिकार हम भारतीयों का होना चाहिए। ऐतिहासिक दृष्टि से भी और हमारी भारतीय सांस्कृतिक दृष्टि से भी। अलम्।

- आचार्य सोमदेव, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

संस्था - समाचार

१६ से ३० सितम्बर २०१५

यज्ञ एवं प्रवचन- जैसा कि विदित है कि ऋषि उद्यान आर्यजगत् के उन स्थलों में से है, जहाँ पूरे वर्ष प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ का अनुष्ठान अपरिहार्य रूप से किया जाता है। प्रात: काल यज्ञोपरान्त वेद के कुछ मन्त्रों का पाठ तथा महर्षि दयानन्द कृत भाष्य का स्वाध्याय किया जाता है। सायंकाल प्रतिदिन यज्ञ और महर्षि दयानन्द द्वारा रचित आर्योद्देश्यरत्नमाला का स्वाध्याय कराया जाता है।

प्रात:कालीन यज्ञ के उपरान्त **डॉ. धर्मवीर जी** ने नासदीय सूक्त के मन्त्रों की व्याख्या करते हुए बताया कि उत्पन्न जगत् का कारण परमाणु नहीं थे, उनको जोड़ने वाला विराट नहीं था, जल नहीं था, आकाश भी नहीं था। इसको आच्छादित करने वाला भी कुछ नहीं था। यह सब किसके शरण में है? जड़ वस्तुएँ चेतन के ही शरण में रह सकती हैं। अत: सब ईश्वर के शरण में ही थे। प्रकट रूप कुछ भी नहीं था। दूसरे मन्त्र में आत्मा के विषय में बताया कि उस समय मृत्यु नहीं थी, अमृत नहीं था, रात और दिन नहीं थे। ज्ञान कराने वाला साधन भी नहीं था। वायु की अपेक्षा से रहित, अपनी धारण शक्ति अपनी सत्ता से परमेश्वर था, उसके अतिरिक्त कुछ नहीं था। सृष्टि निर्माण की व्याख्या वेद के पुरुष सूक्त, हिरण्यगर्भ सूक्त तथा ब्राह्मण ग्रन्थ और दर्शन उपनिषद् आदि शास्त्रों में भी है। इस नासदीय सूक्त की व्याख्या करते हुए मैक्समूलर ने ऋग्वेद भाष्य में लिखा है कि वैसे तो वेद ऋषियों की रचना है किन्तु नासदीय सूक्त पढ़ने के बाद लगता है कि ऋषियों के हृदय में ईश्वर की प्रेरणा अवश्य रही होगी। जो इतने गम्भीर विषय को इतनी सरलता से लिख सके। यह बहुत दार्शनिक विषय है।

प्रात:कालीन प्रवचन के क्रम में ईश्वर-भक्ति की चर्चा करते हुए **स्वामी आशुतोष जी** ने कहा कि ईश्वर के ध्यान का अभ्यास नित्य करना चाहिये। उपास्य के गुण उपासक में आते हैं, क्योंकि वह परमात्मा हमारे जीवनदाता, उद्धारकर्ता, देवों का देव महादेव, माता, पिता, गुरु, राजा, सखा, वरुण और न्यायाधीश है। वह हमको देख रहा है, हम भी उन्हें ज्ञानचक्षुओं से देखने का प्रयास करें। वह हमको सुन रहा है, हम भी उनके दिव्य प्रेरक वाणी को सुनें। वह हमको जान रहा है, हम भी उनको जानने के लिये स्वयं को सुसज्जित कर तैयार करें।

सायंकालीन सत्संग में **आचार्य कर्मवीर जी** ने बताया कि समाज में ईश्वर-भक्ति के विषय में दो विचारधारायें प्रचलित हैं- एक ओर पढ़े-लिखे असामाजिक तत्व अनपढ़ मनुष्यों को बहकाकर गुरुडमवाद चला रहे हैं। महापुरुषों, ऋषि-महर्षि आप्त पुरुषों का अपमान किया जा रहा है। विद्या-रहित, छली-कपटी, अपराधियों को सन्त-महात्मा बनाकर बालबुद्धि वाले मनुष्यों द्वारा पुजवाया जा रहा है। यह सब दुष्कर्म संगठित व्यापार, व्यवसाय और उद्योग बना हुआ है। भोले-भाले मनुष्यों को अज्ञान-अन्धकार में फंसाया जा रहा है। मूर्तिपूजा आदि जड़ का अवैज्ञानिक ढंग से ध्यान करने का उपदेश किया जा रहा है। चालाक लोगों के द्वारा मूर्ख मनुष्यों को भेड़चाल चलने के लिये विवश किया जा रहा है। भक्तों का धन आदि लूटकर उन्हें बहुत निर्धन बनाया जा रहा है। दूसरी ओर परोपकारी विद्वानों, संन्यासियों द्वारा वेद मार्ग का अनुसरण करते हुए ईश्वर-भक्ति के विषय में यथार्थ ज्ञान देकर योगाभ्यास कराया जाता है, जिससे वे सब साधक, उपासक ईश्वर के वास्तविक स्वरूप को जान सकें।

सायंकालीन प्रवचन के क्रम में **उपाचार्य सत्येन्द्र जी** ने आर्योद्देश्यरत्नमाला के 'कर्म' विषय पर चर्चा करते हुए बताया कि कर्म दो प्रकार के होते हैं- सकाम कर्म और निष्काम कर्म। सकाम कर्म वह है जो हम लौकिक फल की प्राप्ति की इच्छा से करते हैं। निष्काम कर्म करने वाला लौकिक फल की इच्छा नहीं करता। सकाम कर्म तीन प्रकार के होते हैं- शुभ, अशुभ और मिश्रित। सकाम कर्म से सुख-दु:ख दोनों ही मिलते हैं। जो हमारी कामनायें इस जन्म में पूरी नहीं होतीं, उसके लिये अगला जन्म होता है अर्थात् सकाम कर्म बन्धन और पुनर्जन्म का कारण हैं। पशु, पक्षी, साधरण मनुष्य, कीट, पतंगा आदि का जन्म

सकाम कर्मों का ही फल है। निष्काम कर्म करने से जीवन में पवित्रता आती है, इससे व्यक्ति ईश्वर के पथ पर तेजी से आगे बढ़ता है।

सभा मन्त्री **श्री ओममुनि जी** ने अपने वक्तव्य में कहा कि हम अपने नगर से बाहर जहाँ कहीं जायें तो ध्यान रखना चाहिये, यदि वहाँ आर्यसमाज हो तो अवश्य जाना चाहिये। इससे संगठन बढ़ता है। **ईशावास्यम् इदम् सर्वम्.....** मन्त्र में बताया गया है कि यह ईश्वर सब जगह है, संसार में ऐसा कोई स्थान नहीं है, जहाँ वह ईश्वर न हो। अत: उन्हें सर्वव्यापक जानकर, मानकर त्यागपूर्वक भोग करो और दूसरों के धन पर गिद्ध दृष्टि मत रखो।

अत: उपरोक्त मन्त्र में ईश्वर के उपदेश अनुसार हम सबको केवल अपने ही भाग पर अधिकार रखना चाहिये, दूसरों का हिस्सा बाँट देना चाहिये। हमें अपनी आय को पाँच प्रकार से खर्च करना चाहिये। पहला अपने और अपने परिवार के स्वास्थ्य अर्थात् भोजन, औषधि आदि के लिये। दूसरा भाग भविष्य के लिये सुरक्षित रख लेना चाहिये। तीसरा भाग यश के लिये अर्थात् सुपात्रों को दान देना, धर्मशाला, कुएँ, प्याऊ लगवाना आदि। वेद में कहा है- **सौ हाथों से कमा और हजार हाथों से दान कर।** चौथा भाग यज्ञ और अतिथि सत्कार में खर्च करना। पाँचवा भाग सरकार को शासन व्यवस्था चलाने के लिये कर (टैक्स) देना।

पुस्तक परिचय

१. पुस्तक का नाम - महाभाष्यस्यनवाह्निकस्य, प्रश्नोत्तराणि (वार्तिक व्याख्या सहितानि)

भाषा - संस्कृत

लेखक - ओङ्कार:

प्रकाशक - चन्द्रगज संस्थान, अवैरनी, मथुरा, उ.प्र.

मूल्य - ५०/- **पृष्ठ संख्या** - १२६

महर्षि पाणिनि ने विश्व की प्राचीनतम भाषा संस्कृत को जो उस समय लोक-व्यवहार में सर्वाधिक प्रयोग की जाती थी, उस भाषा को अत्यन्त वैज्ञानिक एवं सुगठित रीति से सूत्रों द्वारा नियमबद्ध करके अष्टाध्यायी के रूप में रचना करके भाषा विज्ञान के प्रथम वैज्ञानिक के रूप में सम्पूर्ण विश्व में अद्वितीय ख्याति प्राप्त की।

एक विदेशी विद्वान् ने तो अष्टाध्यायी में सूत्रबद्ध भाषा नियमों को देखकर यहाँ तक कहा था कि- ''पाणिनि अष्टाध्यायी मानव मस्तिष्क का अद्भुत चमत्कार है।'' पाणिनि अष्टाध्यायी सूत्रों पर समय-समय पर अनेकानेक विद्वानों द्वारा भाष्य व टीकाएँ लिखी गई, जिससे विद्यार्थी पाणिनि के भाषा के सिद्धान्तों को सुगम रीति से हृदयङ्गम कर सके। पुनरपि इन ग्रन्थों को समादर विद्वत समाज में उतना नहीं मिल सका जितना कि महर्षि पाणिनिकृत सूत्रों पर पतंजलि महाभाष्य को स्थान प्राप्त हो सका।

वैयाकरण शोधार्थी विद्वानों के अनुसार महाभाष्य का पठन-पाठन अनेक बार लुप्त भी हुआ, लेकिन कुछ समय बाद विद्वानों के अथक् प्रयत्न से पुन: इसका अध्ययन-अध्यापन प्रारम्भ हो गया, ईश्वर कृपा से वर्तमान में भी यह प्रक्रिया विद्वानों के तप-त्याग से अभी भी चल रही है जो कि बहुत प्रसन्नता की बात है। इसी प्रक्रिया में आचार्य श्री ने महाभाष्य के नवाह्निक को प्रश्नोत्तर शैली में भाष्य में आए वार्तिकों की व्याख्या सरल सुगम संस्कृत भाषा में लिखकर व्याकरण में रुचि रखने वाले छात्रों के लिए नवाह्निक के क्लिष्ट स्थलों को सुलझाने में हस्तामलकवत् कार्य किया है, जो निश्चय ही स्तुत्य है।

मेरी दृष्टि में प्रत्येक उस छात्र को जो महाभाष्य में अध्ययनरत है या जिसका महाभाष्य प्रारम्भ किया जाना है, श्रद्धेय आचार्य जी की उक्त पुस्तक से लाभ उठाना चाहिए, जिसे पुस्तक का रूप देने में अत्यन्त परिश्रम किया गया है।

मैं आचार्य जी के लिए ईश्वर से उत्तम सुखद दीर्घ जीवन की प्राथना करता हूँ, जिससे व्याकरण तथा साहित्य जगत् में आचार्य जी का यथेष्ट योगदान प्राप्त होता रहे।

- आचार्य सत्येन्द्रार्य, महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

स्तुता मया वरदा वेदमाता-२०

समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि।।

घर में सदस्यों के मध्य सौमनस्य कैसे बना रहे, इसके उपाय इस मन्त्र में बताये गये हैं, उनमें प्रथम है- सदस्यों का खानपान समान हो। भोजन आच्छादन के पश्चात् व्यवहार में आने वाले साधन और किये जाने वाले कार्य भी समान हों। इस मन्त्र में एक महत्त्वपूर्ण बात कही गई है, हमारे परिवार में सामान्य रूप से जिस प्रकार के कार्य होते हैं, उन्हें सम्पन्न करने के लिए उसी प्रकार के साधन भी अपनाये जाते हैं। आजकल साधन केवल सम्पन्नता के प्रतीक बनकर रह गये है। आपके घर में कैसे साधन हैं। वे कितने नये, कितने मूल्यवान हैं, यही बात महत्त्वपूर्ण हो गई है।

साधन आवश्यक तो हैं, साधनों की उपस्थिति मनुष्य को सम्पन्न बनाती है। साधन साध्य के लिये होते हैं। साध्य को सिद्ध करने के काम आते हैं। यदि ये साधन साध्य को सिद्ध करने में समर्थ नहीं हैं तो साधन व्यर्थ का बोझ बन जाते हैं। साधनों की जहाँ तक आवश्यकता होती है, उनका वहीं तक संग्रह उचित है परन्तु अधिक साधन मनुष्य को अपना सेवक बना लेते हैं। साधनों को संग्रह करने के लिये धन का संग्रह करना पड़ता है। यथाकथंचित् उतना धन संग्रह में लग जाता है। फिर उस संग्रह का उपयोग होने या न होने की दशा में उनके रख रखाव पर धन और समय का अपव्यय करना पड़ता है। हमारे जीवन में साध्य छूट जाता है। साधन ही साध्य का स्थान ले लेते हैं। कभी हमारे इन घर, वाहन, वस्त्र, आभूषण या धन आदि की जीवन को चलाने के लिये आवश्यकता होती है परन्तु जब साधन साध्य का स्थान लेने लगते हैं तो हमारी साधना व्यर्थ हो जाती है। हमारा साधनों के प्रति प्रेम इतना बढ़ जाता है कि हम इन वस्तुओं की सेवा में ही पूरा जीवन और सामर्थ्य समाप्त कर देते हैं, वेद कहता है- साधन आपके लिये हैं, आप साधनों के लिये नहीं। अत: मनुष्य को साधनों के आधीन नहीं होना चाहिए।

हमारे देश में साधन सम्पन्न दो ही वर्ण होते हैं- प्रथम क्षत्रिय और दूसरा वैश्य तथा आश्रम परम्परा में तो केवल एक ही आश्रम साधनों की सम्पन्नता रखता है, शेष तीन तो इसी एक आश्रम पर निर्भर रहते हैं और इस परिस्थिति को ही आदर्श माना गया है। चार आश्रमों में केवल एक गृहस्थ को ही सम्पन्नता का अधिकार दिया गया है। शेष ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी व संन्यासी तीनों ही गृहस्थ पर सर्वथा निर्भर करते हैं। तो क्या शेष तीन आश्रमों के पास साधन नहीं होने चाहिएं। साधन तो चाहिए परन्तु इनके उपार्जन का सामर्थ्य उनके आश्रमवस्था में सिद्ध करने वाले प्रयोजनों को व्यर्थ कर देंगे। विद्यार्थी के पास न साधन हैं, न आवश्यकता है, उनकी चिन्ता तो माता-पिता को भी नहीं करनी। ब्रह्मचारियों की चिन्ता करना समाज और राज्य का विषय है। वानप्रस्थी और संन्यासी को साधनों की आवश्यकता अत्यन्त न्यून हो जाती है, उनका भार समाज पर है। इस प्रकार साधन सम्पन्न रहकर सभी आश्रमों की सेवा करना एक गृहाश्रमी का दायित्व है।

इसी प्रकार वर्ण व्यवस्था में ब्राह्मण को साधनों के संग्रह का निर्देश नहीं है, उसे अपना जीवन ज्ञान की खोज, संग्रह और उसके प्रचार-प्रसार में लगाना है, यदि इसमें साधनों की आवश्यकता पड़े तो उसका उत्तरदायित्व समाज और राज्य का है। यहाँ ध्यान रखने की बात है, ये लोग साधन जुटाने का सामर्थ्य नहीं रखते, ऐसा नहीं है। परन्तु साधनों के उपार्जन करने में समय, धन और परिश्रम लगता है, यह सब ज्ञान की तुलना में तुच्छ है, अत: मुख्य विषय पर समय लगाने की बात शास्त्र करता है। शूद्र के पास सामर्थ्य का अभाव है, अत: उसे किसी प्रकार बाध्य नहीं किया गया।

मन्त्र में साधन को साध्य के लिये लगाने की बात कही है। हमारे पास हमारे जीवन के प्रयोजन को सिद्ध करने योग्य साधन होने चाहिये और साधनों को पूरा उपयोग धर्मार्थ की सिद्धि के लिये किया जाना उचित होगा तभी परिवार में विरोध का भाव उत्पन्न नहीं होगा। मनुष्य के आराम, विलास, आलस्य, प्रमाद की स्थिति में साधन अपव्यय और संघर्ष का कारण बनते हैं। अत: कहा है- समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि तुम्हें समान साधन देकर सत्कर्मों में लगाता हूँ।

क्रमश: ....

आर्यजगत् के समाचार

१. सत्यार्थ प्रकाश बांटे- फतेहपुर शेखावटी निवासी एवं कोलकाता प्रवासी श्री दयानन्द जांगिड़ ने ६५००/- रु. की लागत से धार्मिक ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' की १०० प्रतियाँ जांगिड़ सती मन्दिर फतेहपुर में पधारे दर्शनार्थियों को वितरित कीं। आर्यसमाज फतेहपुर के मन्त्री आचार्य रामगोपाल शास्त्री ने प्रेरणा देकर ये पुस्तकें दिल्ली से मँगवाकर दीं।

२. आर्यसमाज चाँपानेरी, अजमेर की स्थापना १९७२ में श्री जीवनलाल आर्य निवासी बिजयनगर, राज. के द्वारा की गई तथा २८ फरवरी २००० से वार्षिक उत्सव व साप्ताहिक हवन और शिविरों का आयोजन सुचारू रूप से चल रहा है। २४ अगस्त २०१४ को आर्यसमाज का पंजीयन करवाया गया, जिसकी पंजीयन संख्या २७/२७/२७ है। १४ से १६ मई २०१५ को वार्षिक उत्सव सम्पन्न हुआ, इस अवसर पर आर्यसमाज मन्दिर निर्माण हेतु स्व. श्री सूरजमल जी लुहार की धर्मपत्नी श्रीमती आलोल देवी के द्वारा आर्यसमाज मन्दिर बनाने के लिए अपने पति की अन्तिम इच्छानुसार भूमि दान दी, जिसके प्लॉट की साइज ४२×१७ फिट है। अत: चाँपानेरी आर्यसमाज इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है। दानकर्ता आर्य परिवार पुत्र श्री रामधन लौहार धर्मपत्नी चाँद देवी पौत्र श्री मुकेश व जितेन्द्र आर्य।

३. जन्माष्टमी उत्सव मनाया- आर्यसमाज माडल कॉलोनी, यमुनानगर, हरि. में केन्द्रीय आर्य सभा के तत्वावधान में योगीराज श्री कृष्ण जन्माष्टमी उत्सव, ६ सितम्बर २०१५ को बड़े धूमधाम से मनाया गया। युवा विद्वान् डॉ. आचार्य नरेन्द्र अग्निहोत्री- गुरुकुल शादीपुर यमुनानगर, पं. धर्मेन्द्र शास्त्री- यमुनानगर, डॉ. कमला वर्मा- पूर्व स्वास्थ्य मन्त्री, हरियाणा सरकार आदि ने अपना उद्बोधन दिया व भजनोपदेशक श्री धर्मसिंह- गागलहेड़ी, उ.प्र. ने सुमधुर भजन प्रस्तुत किये। गुरुकुल वैदिक साधना आश्रम के बच्चों का विशेष योगदान रहा। अन्त में मन्त्री डॉ. गेंदाराम आर्य ने सबको धन्यवाद ज्ञापित किया।

४. प्रतियोगिता सम्पन्न- वैदिक संस्कृति उत्थान न्यास सहारनपुर और आर्यसमाज खेड़ा अफगान के संयुक्त तत्त्वावधान में वैदिक संस्कृति ज्ञान वर्धिनि प्रतियोगिता में लगभग २५ विद्यालयों के ७०० बच्चों ने भाग लिया। २१ सितम्बर को आर्यसमाज सहित आठ केन्द्रों में यह प्रतियोगिता एक साथ हुई। आर्यसमाज के प्रधान आदित्य प्रकाश गुप्त ने वैदिक संस्कृति के बारे में विस्तृत रूप से बताया।

५. आर्य सम्मेलन सम्पन्न- आर्यसमाज पुतलीघर अमृतसर के तत्वावधान में ३० अगस्त २०१५ को आर्य सम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस आर्य सम्मेलन की मुख्य अतिथि श्रीमती सविता दिलावरी तथ श्री सत्यम दिलावरी थे। कार्यक्रम में स्वामी सदानन्द, श्री पं. सत्यपाल पथिक, श्री जगत वर्मा, श्री दिनेश आर्य पथिक तथा डॉ. स्वामी मधुरानन्द मुख्य वक्ता थे। कार्यक्रम के प्रारम्भ में पं. मुरारीलाल आर्य तथा पं. ओमप्रकाश शास्त्री ने वैदिक यज्ञ सम्पन्न करवाया।

६. श्रावणी उपाकर्म व चतुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न- नुआपड़ा जिला स्थित गुरुकुल हरिपुर, जुनानी में श्रावणी पर्व के अवसर पर गुरुकुल में नूतन प्रविष्ट ३० ब्रह्मचारियों का उपनयन, वेदारम्भ संस्कार तथा पूजा की वास्तविकता एवं बोलबम की निरर्थकता से सम्बन्धित शिक्षाप्रद सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पूर्णिमा से लेकर अमावस्या तक २९ अगस्त से १२ सितम्बर २०१५ तक पर्यावरण प्रदूषण समस्या, ग्लोबल वार्मिंग की समस्या एवं अनावृष्टि-अतिवृष्टि तथा असाध्य रोगों से आज का समाज बचे तथा विश्व शान्ति व राष्ट्र रक्षा निमित्त गुरुकुल द्वारा पन्द्रह दिवसीय चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग १ क्वि. शुद्ध गाय घी एवं विभिन्न औषधियों से निर्मित लगभग डेढ़ क्वि. सामग्री से आहुतियाँ दी गई।

७. श्रावणी उपाकर्म मनाया- आर्यसमाज फतेहपुर शेखावटी द्वारा श्रावणी उपाकर्म पर्व श्रावण शुक्ल पूर्णिमा दि. २९ अगस्त २०१५ को जांगिड़ वैदिक विद्यालय परिसर में वैदिक यज्ञ की विशिष्ट आहुतियों के साथ मनाया गया। यज्ञ के आचार्य श्री आचार्य रामगोपाल शास्त्री एवं श्री रजनीकान्त शर्मा थे, यज्ञ के यजमान श्री वरुणमुनि-जयपुर थे। श्री सांवरमल जांगिड़, श्री मंगलचन्द, श्री अनिल कुमार,

शेष भाग पृष्ठ संख्या ९ पर....

पोद्दार संग्रहालय

सलेमाबाद गुरुकुल में ब्रह्मचारी वेदपाठ करते हुए

पहाड़ी पर ब्रह्मचारीगण

शैक्षणिक भ्रमण की झलकियाँ

जैन मार्बल्स, किशनगढ़

हिन्दू कोटमल भारत-पाक सीमा

अन्ध बालक ब्रेल तकनीक से जोड़-भाग करते हुए

अन्ध विद्यालय में मूक-बधिर बालक से बात करते हुए

शैक्षणिक भ्रमण की झलकियाँ

सरदारशहर में

प्रेषक:

परोपकारिणी सभा

दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर

(राजस्थान) - ३०५००१

सेवा में,